मुनि समयसुंदर महाराज कृत

करकंडू, दुमुह, नमि, निग्गइ आदिक चार राजाका चाररास

ओ पुस्तक

जैन धर्मी श्रावक लोकांने नणवा वांचवाने अर्थे योग्य जाणीने

नाना दादाजी गुंड इणनें.

"सौजन्यमित्र" छापायंत्रमांहि छपायोछे

संवत १९४७

ओ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठे भाई भगवानदासजी केशरचंदजी नाहारका दुकान उपर मीलसी.

किंमत पांच आना.

४८९७

॥ अथ करकंडू, दुमुह, नमि, निग्गई ॥

॥ आदिक चार राजाका चार रास ॥

॥ प्रथम करकंडू राजाको रास ॥

दुहा ॥ श्री सिद्धारथ कुळतिलो, महावीर ज्ञ
गवंत ॥ वर्त्तमान तीरथ धणी, प्रणमुं श्री अरि
हंत ॥ १ ॥ तसु गणधर गौतम नमुं, लब्धि त
णो ज्ञंडार ॥ काम धेनु सुरतरु मणि, वारु ना
म विचार ॥ २ ॥ वीणा पुस्तक धारिणी, सम
रुं सरसती माय ॥ मूरखनें पंडित करे, कालि
दास कहेवाय ॥ ३ ॥ प्रणमुं गुरु माता पिता,
ज्ञानदृष्टी दातार ॥ कीडीथी कुंजर करे, ए
मोठो उपकार ॥ ४ ॥ गारुडी फणीथी मणि ग्र
हे, ते जिम मंत्र प्रज्ञाव ॥ तिम महिमा मुज गु
रु तणो, हुं मति मूढ स्वज्ञाव ॥ ५ ॥ सुजनें
सुमतें जागव्यो, ऊठ ऊठ रे ऊठ ॥ गुण वर्ण
व गिरुआ तणा, हुं तुज पूरीश पूंठ ॥ ६ ॥ ते
णें मुज उद्यम ऊपन्यो, पंखीनें जिम पंख ॥ ए
क लाज्ञ वली कहे सुमति, दूध ज्ञरयो जिम शं

ख ॥ ७ ॥ करकंडू राजा दुमुह, नमि नें निग्ग
ई शुद्ध ॥ इण नामें उत्तम हुआ, चारे प्रत्येक
बुद्ध ॥ ८ ॥ चारित्रया चारे चतुर, मोठा सा
धु महंत ॥ चिहुं खंडें कहुं चोपई, जिम पामुं
भव अंत॥९॥चार खंड ए चौपइ,चिहुं खंडें परसिद्ध
॥प्रथम खंड करकंडूनो,सांभलजो मन शुद्ध॥१०॥

ढाल १ ली ॥ राग गोडी ॥ देशी चोपाइनी॥
जंबूनामें एहिज द्वीप, दो चंदा दो सूरज दीप॥
भरत क्षेत्र तिहां कहीयें भलो, जिहां शत्रुंज ती
रथ गुण निलो ॥ १ ॥ त्रेशठ शलाका पुरुष र
तन, जिहां उत्पत्ति जिन धर्म जतन ॥ साढा पं
चविश आरजदेश, साधु साधवी दिये उपदेश
॥ २ ॥ देश कलिंग नामें परसिद्ध, चंपा नयरी
ऋद्धि समृद्ध ॥ राज्य करे दधिवाहन राय, रा
मचंद्र सम न्याय कहाय ॥ ३ ॥ तेज प्रताप अ
धिक जेहनो, वचन न लोपे को तेहनो ॥ वय
री राजा माने आण, दधिवाहनना घणां वखा
ण ॥ ४ ॥ चेडानी जे पुत्री सात, तेह तणी सु
णजो एक वात ॥ वीर वखाणी साते सती, ना
में पाप रहे नहि रती ॥ ५ ॥ चेडो राजा श्राव

क शुद्ध, एक तीर नाखे ते युद्ध ॥ पुत्री परणा
व्यानो सुंस, पण कन्यानें वरनी हुंस ॥ ६ ॥
आप आपणी मन रुचि हुई, पुत्री परणावी जू
जूई ॥ राय उदायन परभावती, संतानिकनें मृ
घावती ॥ ७ ॥ श्रेणिक नृप परणी चेलणा, ते
परपंच तणी खेलणा ॥ ज्येष्टा नंदीवर्द्धन नृप
घरें, लीला लाड करे बहु परें ॥ ८ ॥ चंद्रप्रद्यो
तनें परणी शिवा, सुज्येष्टा ले व्रत पालवा ॥
दधिवाहन घर पद्मावती. साक्षात जाणे सी
ता सती ॥ ९ ॥ रूपें राणी रंभ समान, कल्प
वेली जिम आपे दान ॥ राजाने पण वल्लभघणुं.
नाम जेहनुं परभातें भणुं ॥ १० ॥ रूपवंतनें पाले
शील. ए अधिकाइ लहीयें लील ॥ एक शंखनें दूधे
भरयो, घेवर उपर बूरो धरयो ॥ ११ ॥ एक
सिंहने वली पाखरयो, बाप अने संजम आद
रयो ॥ धनवंत विनय धर्म आदरे, ज्ञानवंतनें
किरिया करे ॥ १२ ॥ माने तीनें बेटो जणयो,
बुद्धिवंतनें विद्या भणयो ॥ कंठ भलो ने गुणे
सिद्धांत, ध्यान धरे ने रहे एकांत ॥ १३ ॥ फा
सु अन्न सुपात्रें दान, भणयो घणुनें न करे मा

न ॥ तपसी न करे क्रोध लिगार, इम रूप शी यल अधिकार ॥ १४ ॥ राजा राणी सुख भो गवे, राज्य काज मुहतो जोगवे ॥ गोडीरागें प हेली ढाल, समयसुंदर कहे वचन रसाल॥१५॥

दुहा ॥ एक दिन डोहोलो उपन्यो, गर्भतणे परभाव ॥ दिन दिन थाये दूबली, राणी तेणे प्रस्ताव ॥ १ ॥ दधिबाहन पूछे प्रिया, कहे को ण कारण एह ॥ तुं कां दीसे दूबली, सुण प्री तम ससनेह ॥ २ ॥ हुं पेहेरूं वेश ताहरो, तुं छत्र धारे शीश ॥ गज चढी वनमांहे भमुं, मु ज मन एह जगीश ॥ ३ ॥ कहे राजा चिंता मत कर, करशुं एह प्रकार ॥ सोहागणी साची तिका, जेहनें वश भरतार ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ राग मारुणी ॥ राणी वेश करी राजानो, गज चढी हर्ष अपारजी ॥ राजा छत्र धरे राणीने, पूठें बहु परिवारजी ॥ १ ॥ कोइ राखो रे कोइ शूर सुभटनें भांखो रे, कोइ दाय उपाय मुज दाखो रे ॥ मुनें हाथी अपहरी जाय, दयाल कोइ राखो रे ॥ पद्मावती राणी इम विलवे, क्षण क्षण विलखी थाय रे ॥ दया

ल कोइ राखो रे ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ एहवी
घात देखी तिण नगरी, लोकनें अचरिज थाय
जी ॥ वन उद्यान विनोद करावी, डोहलो पूरे
राय जी ॥ कोइ रा० ॥ ३ ॥ वूठो मेह प्रथम व
नमांहि, प्रगट्यो नूमि सुगंधजी ॥ बीजा वन
समरंतो दोड्यो, दूर गयो गज अंधजी ॥ को०
॥ ४ ॥ वम्शाखा वलगी रह्यो राजा, राणी गइ
गजसाथें जी ॥ हाहाकार हुउ नगरीमांहि, हाथी
न केहनें हाथेंजी ॥ को० ॥ ५ ॥ डंम्फाकार गयो
अटवीमांहे, दीठुं एक तलावजी ॥ पाणी पीय
ण नणी गज पयठो, राणी लह्यो प्रस्तावजी
॥ को० ॥ ६ ॥ हलवें हलवें गजथी उतरी,
चाली एक दिशि लेइजी ॥ सिंह वाघथी बिहि
ती अबला, कर्मनें दूषण देईजी ॥ को० ॥ ७ ॥
हा हा दैव करुं केम हुं हिवे, कोण कीधां में पा
प जी ॥ कोण विपत्ति अवस्था पाडी, राणी क
रे विलापजी ॥ को० ॥ ८ ॥ क्षण रोवे क्षण
जोवे चिहुं दिशि, क्षण चीतारे राज जी ॥ कु
ण कुण राज लीला नोगवती, ए अवस्था आ
जजी ॥ को० ॥ ९ ॥ किहां चंपा नगरीनां मं

दिर, किहां हींडोला खाटजी॥ किहां प्रीतम पो
ढण सुखशय्या, किहां नवरंगी खाटजी ॥ को०
॥ १० ॥ किहां ते भोजन भगति सजाइ, कि
हां कुटुंब परिवारजी ॥ झंडाकार पडी हुं अटवी,
अबला कोण आधारजी ॥ को० ॥ ११ ॥ वली
वैराग्य चडी ते राणी, रोये न लाभे राजजी ॥
चउराशि लख जीव खमावी, सारुं आतम का
जजी ॥ कोइ० ॥ १२ ॥ दुःखमांहे जे धर्म सं
भारे, तेहने कोइ न तोलेजी ॥ मारुणी रागें
ढाळ ए बीजी, समयसुंदर इम बोलेजी॥को०॥१३॥

ढाल ३ जी ॥ राग वेराडी॥जननी मन आ
शा घणी ॥ ए देशी ॥ हिवे राणी पदमावती,
जीवराशि खमावे ॥ जाण पणुं जग ते भलुं, इ
ण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं,
अरिहंतनी साख ॥ जे में जीव विराधिया, चउ
राशि लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृ
थिव तणा, साते अपकाय ॥ सात लाख तेउका
यना, साते वली वाय ॥ ते मुज० ॥ ३ ॥ दश
प्रत्येक वनस्पति, चौदह साधार ॥ बि ति चउ
रिंद्रिय जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते मुज०

॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रका
शी ॥ चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोरा
शी ॥ ते मुज० ॥ ५ ॥ इण नव परनवें सेवि
यां, जे पाप आढर ॥ त्रिविध त्रिविध करी परि
हरुं, दुर्गति दातार॥ ते मुज० ॥ ६ ॥ हिंसा की
धी जीवनी,बोल्या मृषा वाद ॥दोष अदत्तादान
मैथुन उन्माद ॥ ते मुज० ॥७॥ परिग्रह मेल्यो
कारिमो, कीधो क्रोध विशेष॥मान माया लोन में
कीया, वली राग ने द्वेष ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥ क
लह करी जीव दूहव्या, दीधां कूडां कलंक॥ निं
दा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते मु
ज० ॥ ९ ॥ चाम्री कीधी चोतरे, कीधो थापण
मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, नलो आएयो
नरोसो ॥ ते मुज० ॥ १० ॥ खाटकीने नवें में
किया, जीव नानाविध घात॥ चिडीमार नवें चि
डकलां, मारयां दिन रात॥ ते मुज० ॥ ११ ॥
माछीगर नवें माछलां, झाल्यां जलवास ॥ धी
वर नील कोली नवें, मृग पाड्या पास ॥ ते मु
ज० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने नवें, पढी मंत्र क
ठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधां पाप अ

घोर ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ कोटवालना नवे में
किया, आकरा कर दंड ॥ बंदीवान मरावीया,
कोरडा छडी दंड ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥ परमाध
र्मीने नवें, दीधां नारकी दुःख ॥ छेदन नेदन
वेदना, ताडना अतितिक्ष ॥ ते मुज० ॥ १५॥
कुंनारने नवें जे किया, नीमाह पचाव्या ॥ ते
ली नवें तिल पीलिया, पापें पेट नराव्यां ॥ ते
मुज० ॥ १६ ॥ हालीने नवें हल खेडीयां, फा
ड्यां पृथ्वि पेट ॥ सूड निदान कीया घणां, दी
धा बलद चपेट ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ मालीने
नवें रोपिया, नाना विध वृक्ष ॥ मूल पत्र फ
ल फूलनां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते मुज० ॥
॥ १८ ॥ अधोवाईयाने नवें, नरया अधिका
नार ॥ पोठी ऊंट कीमा पडया, दया न रही लि
गार ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ छीपाने नवें छेत
रया, कीधा रंगण पास ॥ अगनि आरंन किया
घणा, धातुर्वाद अन्यास ॥ ते मुज० ॥ २० ॥
शूरपणे रण झूझतां, मारयां माणस वृंद ॥ म
दिरा मांस माखण नख्यां, खाधां मूल ने कंद
॥ ते मुज० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी,

पाणी उल्लेच्यां ॥ आरंभ कीधा अति घणा,पो
तें पापज संच्यां ॥ ते मुज० ॥ २२ ॥ अंगार
कर्म कियां वली, घरमें दव दीधा ॥ सुंस करया
वीतरागना, कूडा कोसज पीधा ॥ ते मुज० ॥
॥ २३ ॥ बिलि भवें उंदर लीया, गिरोली ह
त्यारी ॥ मूढ गिमार तणे भवें, में जू लीख मा
री ॥ ते मुज० ॥ २४ ॥ भडभूंजा तणे भवें,
एकेंद्रिय जीव ॥ ज्वार चणा गहुं शेकीया, पा
डंता रीव ॥ ते मुज० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण
गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इंधण अग्नि
नां, कियां पाप उदेक ॥ तेमुज० ॥ २६ ॥ विक
था चार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इ
ष्टवियोग पाड्या किया, रुदन विषवाद ॥ ते मु
ज० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत ले
ई भांग्यां ॥ मूल अने उत्तर तणां, मुफ दूषण
लाग्यां ॥ ते मुज० ॥ २८ ॥ साप वींछी सिंह चि
तरा, शिकराने समली ॥ हिंसक जीवतणे भवें,
हिंसा कीधी सबली ॥ ते मुज० ॥ २९ ॥ सुआ
वडी दूषण घणां, वली गर्भ गलाव्या ॥ जीवा
णी ढोल्यां घणी, शील व्रत भंजाव्यां ॥ ते मु

ज० ॥ ३० ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधा कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, ते हशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३१ ॥ नव अनंत नमतां थकां, कीधा परिग्रह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तेहशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३२ ॥ इण परें इण नवें परनवें, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसरुं, करुं जनम पवित्र ॥ ते मुज० ॥ ३३ ॥ राग वैराडी जे सुणे, ए त्रीजी ढाल ॥ समय सुंदर कहे शीलथी, बूटे नव ततकाल ॥ ते मुज० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ वली राणी पदमावती, शरणां कीधा चार ॥ सागारी अणसण कीयुं, जाणपणानुं सार ॥ १ ॥ गाथा ॥ जइ मेहुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्स इमाइ वेलाय ॥ आहार मुवहि देहं, चरमे समयंमि वोसरीयं, सवे तिविहेणं वोसिरियं ॥ १ ॥ दुहा ॥ तिहांथी आगल चालतां, दीठो तापस एक ॥ मनमां धीरज उपनी, अलगो टल्यो उद्वेग ॥ २ ॥ तापस पूछे कोण तुं, सघलो कह्यो संबंध ॥ तापसनें पिण मूलगो, चेडाशुं संबंध ॥ ३ ॥ देइ तापस आशासना, मत कार

श दुःख लिगार ॥ ए संसार असार छे, दुःख तणो भंडार ॥ ४ ॥ राणीनें जोरें करी, खवरा व्यां फल फूल ॥ संप्रेडण साथें चल्यो, तापस सहज अमूल ॥ ५ ॥ आगल जई उन्नो रह्यो, आवी गामनी सीम ॥ हलखेभी धरती हिवे, मुज चांपणनुं निम ॥६॥ सुण पुत्री ए दंतपुर, नामें नगर नजीक ॥ दंत विक्रम राजा नलो, तुं जाजे निर्न्नीक ॥ ७ ॥ इम कहीनें पाछो वल्यो, तापस पर उपकार ॥ राणी पिण पदमावती, पोहोती नगर मझार ॥ ८ ॥

ढाल ४ थी ॥ राग केदारो गोमी॥काची कली अनारकी रे हां ॥ ए देशी ॥ हिवे राणी नगरी गइ रेहां, पूछंती धर्मशाल॥कर्म विटंबणा॥ विधिशुं वांदी साधवी रेहां, बेठी अबलाबाल॥क० ॥ १ ॥ है है कर्म विपाक, किमहि न छूटणां॥ ए आंकणी ॥ रोवा लागी अति घणुं रेहां, नयणें नीर प्रवाह ॥ क० ॥ कोण कोण कष्ट में नोगव्यां रेहां, दुःख न्नरी मनमां ही ॥ क० ॥ २ ॥ साधवीयें धर्म सुणावियो रेहां, ए संसार असार ॥ क० ॥ धर्म सामग्री दोहिली रेहां, कुटुंब

अनंती वार ॥ क० ॥ ३ ॥ वैराग्यें मन वाली युं रेहां, लीधो संजम भार ॥ क० ॥ दीक्षाथी बीहिती थकी रेहां, न कह्यो गर्भ विचार ॥ क० ॥ ४ ॥ अनुक्रमें व्रत पालतां रेहां, वाध्युं मोटुं पेट ॥ क० ॥ कोढ पाढ ग्रह खेटनो रेहां, न रहे गानुं नेट ॥ क० ॥ ५ ॥ कहे गुरुणी बेठी रहो रेहां, अमें करशुं निर्वाह ॥ क० ॥ लोक बोक प्रीछे नही रेहां, जिनशासन उमाह ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ बेटो जायो साधवी रेहां, गनो मूक्यो समशाण ॥ कर्म० ॥ रतन कंबल शिर वींटीयो रेहां, वली मुद्रडी सहि नाण ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ तोपिण बालमुत्र नही रेहां, ऐ ऐ पुण्य प्रमाण ॥ क० ॥ चंडाल देखी चमकीयो रेहां, स्त्रीने दीधो आण ॥ क० ॥ ८ ॥ अपकरण नाम आपीयुं रेहां. दिन दिन वाधे तेह ॥ कर्म० ॥ चंडालणीशुं साधवी रेहां, मांडे अधिक सनेह ॥ क० ॥ ९ ॥ गुरुणी पूछे साधवी रेहां, गर्भ न दीसे केण ॥ क० ॥ में जायो मुत्र थको रेहां, बाहिर परठव्यो तेण ॥ क० ॥१०॥ बालकशुं बालक रमे रेहां, मांगे द्यो मुझ दंड॥

क० ॥ खाज खणावे हाथशुं रेहां, नाम पाड्युं क रकंडु ॥ क० ॥ ११ ॥ साधवी आंत्र तपे घणुं रेहां, बालकशुं बहु प्रेम ॥ क० ॥ बेटो पिण मा ने मिले रेहां, मोह वाध्यो बहु एम ॥ कर्म० ॥ ॥ १२ ॥ मीठा मेवा साधवी रेहां, खाजां लाडु खुर्म ॥ क० ॥ वोहोरीने दीये बालनें रेहां, धिग् धिग् मोहनी कर्म ॥ क० ॥ १३ ॥ करकंडु मो ठो थयो रेहां, रखवाले समसाण ॥ क० ॥ कर्म रुलावे जीवने रेहां, कोई न चाले प्राण ॥ क० ॥ ॥ १४ ॥ चोथी ढाल ए में कही रेहां, राग के दारा गाय ॥ क० ॥ समय सुंदर कहे क र्नी रे हां, में गति कहीय न जाय ॥ क० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ कारण किण समसानमें, आव्या दो य अणगार ॥ वंशजालि मांहे रह्यो, दीठो दंड एक सार ॥ १ ॥ एक यति लाठी तणो, जाणे गुणनें दोष ॥ बीजा साधु प्रत्यें इम कहे, सह जें राग न रोष ॥ २ ॥ एक गांठि लाठी भली, वेढ दुगंठी थाय ॥ लाभ तिगंठी संपजे, चउगं ठी मरणाय ॥ ३ ॥ पंच गंठी पंथभय हरे, षट गंठी भय जोय ॥ सत गंठी नीरोगता, अठ

गंठी निधि होय ॥ ४ ॥ नवगंठी लाठी सुजस. दस गंठी दे सिद्धि ॥ चारंगुल वधती ग्रही, इणें लाठी नृप रिद्धि ॥ ५ ॥

ढाल ५ मी ॥ राग सारंग मल्हार ॥ करकंडु पासें हतो, तिहां ब्राह्मण पिण एक हो ॥ ब्राह्मण ॥ साधु वचन बेहु सांभल्यां, लागी चूप प्रत्येक हो ॥ ब्रा० ॥ १ ॥ दंड न देउं तुजनें म्हारो, कहे करकंडू बाल हो ॥ ब्रा० ॥ चालि जाश्यां आपण चउतरे, हूं धरती रखवाल हो ॥ ब्रा० ॥ दंड० ॥ २ ॥ चार अंगुल धरती खणी, ब्राह्मणें लीधो दंड हो ॥ ब्रा० ॥ करकंडु झोंटी लीयो, झगडो लागो प्रचंड हो ॥ ब्रा० ॥ ॥ दंड० ॥ ३ ॥ नगरी गया बे झगडता, चउवटीये कियो न्याय हो ॥ ब्रा० ॥ रे बालक ब्राह्मण भणी, लाठी दीये पुण्य थाय हो ॥ब्रा०॥ ॥दंड० ॥ ॥ ४ ॥कहे करकंडु हूं देउं नही, राज पामीश अभिराम हो ॥ बा० ॥ पंच हसी कहे एहनें, तुं देजे एक गाम हो ॥ ब्रा० ॥ दंड० ॥ ॥ ५ ॥ झगडो भांग्यो इणी परें, दंड लिउ करकंडु हो ॥ ब्रा० ॥ कोप कीयो ब्राह्मण मिलि, मा

री करां शतखंड हो ॥ आ० ॥ दंड० ॥ ६ ॥ क रंकडु माता पिता, नाशिगया ततकाल हो ॥ आ० ॥ नगर कंचनपुर आवीयरे, सूता सरोवर पाल हो ॥ आ० ॥ दंड० ॥ ७ ॥ ढाल भणी ए पांचमी, राग सारंग मल्हार हो ॥ आ० ॥ समयसुंदर कहे हिवे कहुं, पुण्य तणां फल सार हो॥आ०॥८॥

ढाल ६ ठी ॥ राग खंभायतीनी देशी ॥ राजा मुन अपुत्रीन रे, तिणे अवसरे तिणे गामो रे ॥ अश्व एक अधिवासिन रे, नगर भमे ठाम ठामो रे ॥ १ ॥ राज पामीयोरे, करकंडु कंचनपुर तणुं रे, फल्युं साधुनुं वचन ततकाल सोहामणुंरे, ऐ ऐ पुण्य प्रमाण ॥ राज० ॥ ए आंकणी ॥ नगरी पुरुष नहीं तिस्योरे, लाख मिली लोकाई रे॥पुण्य विना नवि पामीयें रे, मोटी पदवी कांइ रे ॥ राज० ॥ २ ॥ नगर बाहेर हय आवीयोरे, सूतो देखी कुमारोरे ॥ त्रण प्रदक्षिणा देई करी रे, हिस्यो हर्ष अपारोरे ॥राज०॥ ॥ ३ ॥ जठ्यो कुंवर उतावलोरे, जंघ बगाई खातो रे ॥ पुण्यें धकेल्यो तरफडी रे, जांणे दालिद्र जातोरे ॥ राज० ॥ ४ ॥ अधिकारी नर आ

वियारे, जय जय शब्द करंतारे ॥ कर जोमी उ
न्ना रह्यारे, चामर छत्र धरंतारे ॥ राज० ॥ ५॥
राजा अश्व उपरें चढ्योरे, चाल्यो नगर मझा
रो रे ॥ हय गय रथ पायक तणोरे, पूठें अंत
न पारोरे ॥ राज० ॥ ६ ॥ नगरी मांहें पेसतांरे,
ब्राह्मण आमा आयारे ॥ ए चंडाल राजा हुउरे, प्र
णमुं नही अम पाया रे ॥ राज० ॥ ७ ॥ राजा
दंम नमाडीयोरे, अग्नि ज्युं बलवा लागारे ॥ बी
हिता विप्र आवी नम्यारे, चाल्युं नही कोइ त्रा
गुं रे ॥ राज० ॥ ८ ॥ वामत्र स्थानवासी जिके
रे, हरिकेशी चंमालोरे ॥ करकंडु ब्राह्मण किया
रे, ते सघला ततकालोरे ॥ राज० ९ ॥ सकल
नगर शिणगारीयुं रे, आणंद अंग न मावे रे ॥
गोंख उपरें बाला चडी रे, इण गली राजा आ
वे रे ॥ राज० ॥ १० ॥ घर घर गूडी उछलेरे.
तोरण बांध्यां वारो रे ॥ हाट पटंबर छाईया रे,
नीड घणी दरबारो रे ॥ राज० ॥ ११ ॥ पूर्ण
कलश लेइ पद्मिनी रे, सहु सामहीये आवे रे ॥
गोरीगावे सोहलो रे, मोती थाल नरावे रे ॥
राज० ॥ १२ ॥ नवरंग नेजा फरहरेरे, ढोल द

भाभा वाजेरे॥मदन भेरि वाजे भलीरे, नादें अं
बर गाजेरे ॥ राज० ॥ १३ ॥ राज मंदिर राय
आवीयो रे, बेठो तखत तुरंतोरे ॥ प्रजा पाले
आपणी रे, न्याय तपास करंतोरे ॥ राज० ॥
॥ १४ ॥ राजा करकंडु हिवे रे, आपणी आण
वरतावेरे ॥ मनवंछित फल पामीयेरे, पुण्य त
णे परभावें रे ॥ राज० ॥ १५ ॥ भलो रागकं
भायतीरे, सोहेलानी ढाल छठीरे ॥ समय सुंद
र कहे श्रावकोरे, सांभलसां अति मीठी रे॥१६॥

दुहा ॥ हिवे ते ब्राम्हण आवियो, सुणि रा
जाने राज ॥ गाम एक मांगे भलुं, जेहथी सी
जे काज ॥ १ ॥ करकंडु राजा कहे, वाच काच
निकलंक ॥ मन मान्युं विप्र मांगलुं, गाम एक
निःशंक ॥ २ ॥ चंपा नगरी हुं वसुं, दधिवाहन
जिहां राय ॥ तिहां दे गाम सुखें रहुं, कोण क
रे आव जाय ॥ ३

ढाल ७ मी ॥ राग सिंधूडो ॥ भेवाभा राजारे ॥
ए देशी ॥ कागल लिखी दीधोरे, विप्र चाल्यो सी
धोरे॥वलीलीधो सातूनो साथे संबलोरे॥चंपापुर पो
होतोरे॥ जिहां पोतें रहतोरे॥ मनमांहि गहगहतो,

वंछित मुझ फलो रे ॥ १ ॥ चंपापुरी राजा रे,
दधिवान राजा रे ॥ एक गाम ब्राह्मणने देजो
अति जलुरे ॥ इणे गामने ठामेरे, राय बीजो
पामेरे ॥ इण काम विण कीधे थाशे सही की
ल्लोरे ॥ २ ॥ कागल देखाड्योरे, नृप त्रिसुलो
चाड्योरे ॥ वली त्राड्यो ब्राह्मणनें राजा कोपी
उरे ॥ चंमालनो बेटोरे, ए राजथी मोटोरे ॥ म
तजेटो कंचनपुर किणे ए थापीयोरे ॥ ३ ॥ वल
तो दूत मूक्योरे, दधिवाहन चूक्योरे ॥ घणुं कू
क्यो वली बोल कहाव्या आकरारे ॥ करकंडु रा
जारे, सुणि करत दीवाजारे ॥ ततकाल वजार्यां
बाजां चढंतरां रे ॥ ४ ॥ कटकी करी धायोरे,
चंपापुरी आयो रे, तपतेज सवायोरे पुर वींटी
रह्योरे ॥ गढरोहो मंडयोरे, अभिमान न छंडयो
रे, निजबोल न खंड्योरे, नृप साहामो अडयोरे
॥ ५ ॥ रणभूमिका सूझेरे, नालगोला ऊझेरे, ग
डडंत गयगुडे शेषनाग सलसलेरे ॥ सरणाई
वाजेरे, सिंधुडो साजेरे, शूरवीर विराजे ऊंचा उ
छलेरे ॥ ६ ॥ पहेरया जिण शालारे, उमव्या मे
हू काला रे, शिर टोप बनाया नेजा ऊबकता रे॥

भाला अणियालारे, उगलेपालारे, एक सुभट मुग
ला चाले चमकतारे ॥ ७ ॥ वाजे रणतुरां रे, बेउ
दल पूरां रे, एक एकथी शूरा सुभट ते साथमें
रे ॥ जमकी जीभ लबके रे, जाणे विजली च
मके रे, तरवार उघाभी ऊबके हाथमें रे ॥ ८ ॥
वहे तीर वचालें रे, आवंतां टालेरे, वयर वाले
ते पाछो पिण सासे नही रे ॥ निज नेजा फरके
रे, वढवाने वरकेरे, पग एक न सरके पाछा ते
सहीरे ॥ ९ ॥ मूछे वल घाले रे, आगलथी चा
ले रे, फोज आवंती वारे एकण वारकीरे ॥ ए
क पागडा छेडोरे, नृप होडाहोडेरे, अणीए अ
णी जोडे फोजां मारकीरे ॥ १० ॥ छेडी आक
स बाजी रे, बेउ राजा राजी रे, न रहे गज वा
जी झाल्या केम किये रे ॥ ठाकुरब पुकारे रे,
बाप बिरुद संभारे रे, आज जय ते तुम्हारे भु
जें पामीयेंरे ॥ ११ ॥ भाजणारा सुस लीधारे,
गंगोदक पीधां रे, भलां भोजन कीधां ताजा
चूरमां रे ॥ राणीरा जाया रे, आम्हा साम्हा
धायारे, घणा अमल खवराया चडिया शूरमांरे
॥ १२ ॥ एक कायर कंपेरे, चिहुंदिशि दल चं

पेरे, मुख जंपे हाहा हिवे किण दिशि जागशुंरे ॥ शूरवीर आडुकेरे, होंशे रण ढूकेरे, मुख कूके आज लटापट लागशुंरे ॥ १३ ॥ संग्राम मंडा णो रे, नहीं को तिसो शाणो रे, राय राणो सम जावे जे बिहुं रायनेरे ॥ हुती वात थोडी रे, थई क्लेशनी कोडीरे, न शके कोइ ठोडी समजायने रे ॥ १४ ॥ सिंधुडे रागे रे, ॥ सुणि शूरिमा जा गेरे, अति मीठी लागे ढाल ए सातमीरे ॥ स मयसुंदर आखेरे, हिवे वढतां राखेरे, पदमावती पाखें कुण मति समी रे ॥ १५ ॥

ढाल ८ मी ॥ राग आशावरी सिंधूडो ॥ चे त चेतन करी ॥ ए देशी ॥युद्ध सुणयुं पदमाव तीरे, गुरुणी पूछे विचार ॥ आवी तिहां उताव लीरे, हा मत होये संहारोरे ॥ १ ॥ धन पदमा वतीरे , जांज्यो वयर विरोधोरे, लाभ घणो थ यो, दधिवाहन प्रतिबोध्योरे ॥ धन पद० ॥२॥ प्रथम गइ पदमावती, करकंडुनी पास ॥ कहे केम जूझे बापशुंरे, राजा रह्यो विमासोरे ॥ ध न० ॥ ३ ॥ ते केम राजा पूछियुंरे, साधवी क ह्युं सरूप ॥ तो पिण पग पाछा न देरे, अति

अभिमानी ते नृपरे ॥ धन० ॥ ४ ॥ चालीने चंपा गईरे, पोहोती नृप आवास ॥ दासीए दीठी स्वामिनीरे, आवी मिली सवि पासेरे ॥ धन० ॥ ५ ॥ प्रणमीने रोई घणुंरे एह अवस्था देखी ॥ दधिवाहन पिण आवीयोरे, दीठो साधवी वेपारे ॥ धन० ॥ ६ ॥ राजा पाय प्रणमी करीरे, पूछे गर्जनी वात ॥ ए तुझ अंगज जेहशुंरे, युद्ध करे दिन रातोरे ॥ धन० ॥ ७ ॥ राजा अति हर्षित हुउ रे मिलवा साहामो जाय॥ करकंडु पिण बापनारे, प्रणमे जगतिशुं पायरे ॥ धन० ॥ ८ ॥ पैसारो करी आणीयोरे, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ घर घर रंग वधामणांरे, चंपा नगरी सनूरोरे ॥ धन० ॥ ९ ॥ कंचन पुर चंपा तणांरे, दिये सुतने बेहु राज ॥ दधिवाहन दीक्षा ग्रहीरे, सारयां आतम काजरे ॥ धन प०॥ ॥ १० ॥ करकंडु परणी घणीरे, प्रेमदा तेणें प्रस्ताव ॥ राज लीला सुख भोगवेरे, पुण्य तणे परभावोरे ॥ धन० ॥ ११ ॥ सिंधूडो आशा मिलीरे, पुण्य तणां फल एह, आठमी ढाल रसाल छेरे, समय सुंदर कहे एहोरे ॥ धन० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ हिवे करकंडु रायने, गोकुलशुं बहु प्रेम ॥ एक दिन चाल्यो देखवा, कहेवा लाग्यो एम ॥ १ ॥ सुण गोकुल ए वाछडो, वर्ण सपेत सशुद्ध ॥ एहनी मानुं एहने, धवर वे तुं दूध ॥ ॥ २ ॥ वली ए जब मोटो हुवे, तब बीजी पिण गाय ॥ दोहीने दूध पायजे, जिम ए मातो थाय ॥ ३ ॥ एम कही नृप पाछो वल्यो, गोकुलें कीधु तेम ॥ वृषभ युवान थयो सबल, राख्यो न रहे केम ॥ ४ ॥ तीखां शिंग सुकुंडलां उंचो कुंनी थून्न ॥ गल कंबल जाडो सबल, जाणे जोईए ऊन्न ॥ ५ ॥ मारे ठोंसे मिलपतो, निबंल वृषभने नित्य ॥ उंचुं पूछ उलालतो, त्राडुके मय मत्त ॥ ६ ॥ एक दिन वली नृप देखीयो, सुंदर मातो संड ॥ राजाने अचरिज थयुं, ऐ ऐ बलद प्रचंड ॥ ७ ॥

ढाल ९ मी ॥ राग टोडी धन्याश्री ॥ मुनीसर अतिथि नलो ए कोय ॥ ए देशी ॥ वली करकंडु आवीयोजी, गोकुल देखण हेत ॥ पूछ्यो राजा गोकुलीजी, बलवंत बलद ते केतरे ॥ १ ॥ जीवमा, ए संसार असार ॥ करकंडु इम चिंत

वे जी, साचो जिन धर्मसाररे ॥ जीव० ॥ ए आ कणी ॥ तिण अवसर बूढो थयोजी, मडीयो नाम कहाय ॥ जरा करी थयो जाजरोजी, उठण नी नहीं आयरे ॥ जीव० ॥ २ ॥ पड्यो पड्यो जाये दल्योजी, मूकी बेठो वाट ॥ सडण पडण घटी जतोजी, पड्यो करे अरडाटरे ॥ जीव० ॥ ॥ ३ ॥ कर जोडी कहे गोकुलाजी, एहिज बलद तिकोय ॥ नृप चिंते बूढापणेजी, एह अवस्था होयरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ आग चोर जल भय घणाजी, गरथ ते अनरथ मूल ॥ वार न लागे विणसतांजी ॥ धर्म खरो अनुकूल रे॥जी०॥ ॥ ५ ॥ तरु पंखी मेलो जिस्योजी, कुटुंब तिस्युं कहेवाय ॥ जाये ते गति जूजूई जी, साचो जिन धर्म सखायरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ मात पिता बंधव सुता जी, अंतेउर निजहर्म्म ॥ स्वारथ विण विहडे सहूजी, विहडे नही जिनधर्मरे ॥जी०॥ ॥ ७ ॥ डाभ अणीजल बिंदूउजी, जिम पाकुं तरुपान ॥ अथिर ए तिम अउखुंजी, थिर निश्चल धर्म ध्यानरे ॥ जी० ॥ ८ ॥ जरा करी अति जाजरो जी, काचो भाटी भंड ॥ काया रोग

समाकुलीजी, जिन धर्म एक अखंडरे ॥ जी० ॥ ॥ ९ ॥ यौवन जाये जोरमेंजी. जाणे नदीनो वेग ॥ राख्युं न रहे केहनुंजी, धर्म रहे दृढ टेकरे ॥ जी० ॥ १० ॥ इम सहू को जग कारिमो जी, को नहीं राखणहार ॥ साचो एक संसारमेंजी, जिनधर्म एक आधाररे ॥ जी० ॥ ११ ॥ टोमीने धन्याशरीजी, नवमी ढालें राग ॥ समय सुंदर कहे सांभलो जी, जिम उपजे वैरागरे ॥ जी० ॥ १२ ॥

ढाल १० मी ॥ राग धन्याश्री ॥ चंदन नगरी दीपती ॥ ए देशी ॥ एम वृषभें प्रतिबूझीउ, वली कीधो मस्तकें लोच ॥ राज ऋधि तृण जिम परिहरी, अति भलो ए आलोच ॥ अ० ॥ १ ॥ मुनिवर वांदीयें ॥ करकंडु साधु सुसाधुरे, पेहलो प्रत्येक बुद्ध ॥ ए आंकणी ॥ तत्काल उघो मुहपत्ती, देवता दीधो वेश ॥ वैराग संजम आदरयो, पांगुरयो तुरत प्रदेश ॥ पांगु० ॥ मुनि० ॥ २ ॥ करकंडुनां केतां कहुं, एकजीभे गुण वखाण ॥ एकठा च्यारे थायशे, ए खंड चउथे जाण ॥ ए० ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ गछवडा खरतर गुरु वडा, जिणचंद्र युगह प्रधा

न ॥ जिणसिंहसूरी सुजश घणो, जसु दियो अकबर मान ॥ जसु० ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ आगरें श्रावक दीपता, श्रीमाली ने उसवाल ॥ विमल नाथ प्रसादथी, अति सुखी चतुर खुशाल ॥ अ० ॥ मु० ॥ ५ ॥ संवत सोले चोसठ वली, मास फागुण सार ॥ ए प्रथम खंड पूरो थयो, सिद्धि योग ने बुधवाररे ॥ सिद्धि०॥मुनि० ॥६॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना, गणि सकलचंद मुणिंद ॥ ते सुगुरुने सुपसाउलें, मुज सदा सुखआनंद ॥ मुज० ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ ए ढाल में दशमी भणी, धन्याश्री ए राग ॥ गणि समयसुंदर इम भणे, श्रीसंघ सुजश सोभाग ॥ श्री० मुनि० ॥ ८ ॥ इति श्री करकंडू नाम्नः प्रथम प्रत्येक बुद्धस्य रासे प्रथम खंड संपूर्णः ॥

॥ अथ दुमुहराजाको द्वितीय रास लिख्यते ॥

दुहा ॥ ब्राह्मी लिपी प्रणमुं वली, अक्षर रूप विचार ॥ भगवती सूत्र धुरें भणी, श्री सोहम गणधार ॥ १ ॥ दुमुह नामें राजा भलो, बीजो प्रत्येक बुद्ध ॥ तस बीजो खंड बोलशुं, माठा मिश्री दूध ॥ २ ॥ सावधान थइ सांभलो, मु

को कच पच वात ॥ काच तणा कटका तजी, सहुको पीये निवात ॥ ३ ॥

ढाल १ ली ॥ राग वेलावल ॥ मनको प्यारो तनको प्यारो ॥ ए देशी ॥ जंबू द्वीप मेरु दक्षिण दिशि, भरत क्षेत्र अति साररे माई ॥ गंगा सिंधु नदी वहे निर्मल, जाणे मोतीको हाररे माई ॥१॥ राजा राज करे जय नामें, हरिकुल पंकज भाणरे माई ॥ गुणमणि माला नयण विशाला, गुणमाला पटराणीरे माइ ॥ रा० ॥ ॥ २ ॥ हार विचें जेम पदक बिराजे, तेम तिहां देश पंचालरे माई ॥ नयर कंपिल पुर जाणो नगीनो, ऋद्धि समृद्धि रसालरे माई ॥ राजा० ॥ ३ ॥ देहरा विण किहां दंड न दीसे, लोकने सबल आसानरे माई ॥ दीवा विण नहीं स्नेह तणो क्षय, हाट विना नही मानरे माई ॥ राजा० ॥ ४ ॥ सर्प्प विना को नही दो जीभो, असि विण नही दृढ मूठरे माई ॥ मांहोमांहे न को दे केहने, धनुष्य विना निज पूंठ रे माई ॥ राजा० ॥ ५ ॥ बंध नही नारी वेणी विण, सारी विण नही माररे माई ॥ तर्क विना नही वा

द नगरमें, पुत्र विना नहीं नारीरे माई ॥ रा०
॥ ६ ॥ दान विना कोइ व्यसन न दीसे, धर्म
विना नहीं लोजरे माई ॥ न्याय निपुण राजध
र्मी जन, सुंदर नगर सशोजरे माई ॥ राजा०
॥ ७ ॥ रागवेलावल पेहली ढालें,बे बे अर्थ वि
चाररे माई ॥ समय सुंदर कहे समजी लेजो,
केहजो सजा मजाररे माई ॥ राजा० ॥ ८ ॥

ढाल २ जी ॥ राग गोडी ॥ रामचंद्रके बा
ग, चंपो मोहोरी रह्योरी ॥ ए देशी ॥ एक दि
वस जयराय, पजणे दूत जणी री ॥ कहे अधि
काइ कांय, मोथी अवर तणी री ॥ १ ॥ चित्र
सजा अतिचंग, राजन नही ताहरे री ॥ अधि
कारी बोलाय, राजा हुकम करेरी ॥ २ ॥ तुरत
बोलाया ओड, धरती रंग खणी री ॥ वेगें मतला
वो वार, राजा चोंप घणीरी ॥ ३ ॥ गाथा ॥ रा
याणं वयणाणं, देवाणं मणसाणं ॥ सेठाणं गर
थाणं, पामराणं जुजाणं ॥ १ ॥ ढाल ॥ खणतां
पांचमे दीह, दीठो मुकुट जलो री ॥ सर्वरत्नम
य सार, तेज प्रताप निलोरी ॥ ५ ॥ दोड्यो व
धाइ दीध, राजा जय हरख्यो री ॥ नृप आ

ठ्यो तिणे ठाण, निज नयणें निरख्योरी ॥ ६ ॥ बाजां वाजिंत्र तूर, बाहेर मुकुट लीयोरी ॥ दीधुं अति बहु मान, जिणें ते प्रगट कीयो री ॥ ॥ ७ ॥ थोडे दिन ततकाल, चित्रसभा नीपनी री ॥ अनुपम अचारिजभूत, इंद्रसभा झिपनी री ॥ ८ ॥ शुभमुहूर्त्त शुभ योग, तासु प्रतिष्ठा करीरी ॥ उत्सवकीध अनेक, कीर्ति जग पसरी री ॥ ९ ॥ ते चित्रसभा मझार, सिंहासण उपरें री ॥ बेठो श्रीजयराय, मस्तक मुकुट धरेरी ॥ १० ॥ जय राजा मुखचंद्र, प्रतिबिंबो प्रगटे री ॥ लोक मिल्यां लख कोड, नाम दुमुह प्रगटे री ॥ ११ ॥ गोडी राग रसाल, बीजी ढाल कही री ॥ समय सुंदर कहे एम, सुणतां सरस सही री ॥ १२ ॥

ढाल ३ जी ॥ कामण गारारे लोक ॥ ए देशी ॥ दुमुह नामे राजाघरें रे, गुणमाला पटराणी ॥ अनुक्रमें सात बेटा जण्या रे, साते सुकज सुजाण ॥ १ ॥ आ कामिनी तृप्ति न पामे केम ॥ रढ लीधी मूके नहो रे, पामे नव नवा प्रेमरे ॥ आ का० ॥ ए आंकणी ॥ जनमथी मा

या केलवीरे, शीखे घरनुं सूत्र ॥ धूलडीयें रम
ती कहेरे, ए मुज पति ए पुत्ररे ॥ आ० ॥ २ ॥
देह समारे दिन प्रत्यें रे, शीखी नाण विन्नाण ॥
अणख अदेखाई करे रे, गाये त्रियानां गानरे ॥
आ० ॥ ३ ॥ आराधे कुलदेवता रे, विनंति करे
वारंवार ॥ गौरीगण गोरी रमे रे, नलो होजो
नरतार रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ परणी पिण रहे पूछ
ती रे, वशीकरण एकांत ॥ किमहि पियुडो वश
करुंरे, पूरुं मननी खांतरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुख
पामे नरतारनुं रे, तो पुत्र वांछे नार ॥ पुत्र पां
खे कहे कामिनीरे, कांइ सरजी किरतार रे ॥
आ० ॥ ६ ॥ पुत्र परणावुं प्रेमशुंरे, वहू देखुं ए
क वार ॥ गोद खेलाउं पोतरा रे, सफल करुं
अवतार रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ बालक पीडा उपजे
रे, प्रायें उगमते सूर ॥ खेत्रपालें नमती रहेरे,
ढोले तेल सिंदूररे ॥ आ० ॥ ८ ॥ पुत्र प्रमुख
सुख उपनां रे, तो पिण जीव उद्वेग ॥ गुणम
ला रहे झूरतीरे, पुत्री न पामी एकरे ॥ आ० ॥
॥ ९ ॥ चोरी न बांधी आंगणेरे, तोरणें नावी जा
न ॥ पेसतो जमाइ न पोंखीयोरे, ते जीव्युं कुण

ज्ञान रे ॥ आ० ॥ १० ॥ हाथ मुकावण हाथी योरे, के घोडा के गाम ॥ जमाइ न दीधो दाय जोरे, तो धन केहु कामरे ॥ आ० ॥ ११ ॥ धनतनसघली नारीनोरे, सहज सदारो एह ॥ पुत्रथकी पिण वालहोरे, नवल जमाई नेहरे॥आ० ॥ १२ ॥ दीसे राणी दूबली रे, प्रीतम पूछ्यो ज्नेद ॥ गुणमाला कहे गल गलीरे, पुत्री एक उमेदरे ॥ आ० ॥ १३ ॥ मान्यां इछ्णां मानणां रे, दंड देवले जाय॥ दोड धाव करतां थकां रे, किण मेलें पुत्री थायरें ॥ आ० ॥ १४ ॥ कल्प वेलि मांजरि ज्नलीरे, दीठी सुपन मझार ॥ बहु जतने बेटी थईरे, राणी हर्ष अपाररे ॥ आ०॥ ॥ १५ ॥ रूपें कुंयरी रूयडी रे, मदनमंजरीनाम ॥ यौवन आवी जोरमेंरे, सकलकला अज्निराम रे ॥ आ० ॥ १६ ॥ सयमसुंदर कहे में ज्नणी रे, इण परें त्रीजी ढाल ॥ मुरधर लोकनुं पूछ्यो रे, ते कहेशे ततकालरे ॥ आ० ॥ १७ ॥

ढाल ४ थी ॥ राग ज्नूपाल ॥ सरवणीयानी देशी ॥ तिणे अवसर उजेणी राय, चंडप्रद्योतन नाम कहाय ॥ जोर वहे वारु जेहनो, तेज प्रता

प सबल तेहनो ॥ १ ॥ चंडप्रद्योतन आगल
दूत, वात कहे ए अचरिजभूत ॥ नगरी कंपि
लानो धणी, तेह तणी महिमा अतिघणी ॥२॥
प्रगटयो मुकुट रतन अभिराम, दुमुह थयुं ज
य नृपनुं नाम ॥ किणही राजाने आजते नही,
एहवो मुकुट जाणजो सही ॥ ३ ॥ चंडप्रद्योत
ते अति लोभियो, मुकुट लेण उपर मन कि
यो ॥ मूक्यो दूत ते कारज सिद्धि, विनाशका
ले विपरीत बुद्धि ॥ ४ ॥ दूत जाइ कहे दुमुह
नरेश, मुकुट दिये मत करे कलेश ॥ चंडप्रद्यो
तनने ए योग, रतन कहीजें सबलो भोग ॥५॥
दुमुह राय पिण नही पाधरो, वलतो वचन क
हे आकरो ॥ मुझने पिण वल्लभ ए बोल, तुझ
स्वामीनां रतन अमोल ॥ ६ ॥ हाथी एक अन
लगिरि नाम, अग्निभीरु रथ अभिराम ॥ शिवा
नामें राणी अदभुत, लोह जंगो राजानो दूत॥
॥ ७ ॥ ए चारे द्यो मुझ एक वार, पछे करशुं
ते मुकुट विचार ॥ दूत जइ कहे सघला बोल,
चंडप्रद्योतन कोप्यो निटोल ॥ ८ ॥ राग एह
भण्यो भूपाल, चम्भडतानी चोथी ढाल ॥ स

मय सुंदर कहे हिवे संग्राम, करशे पिण रेहे शे नहीं माम ॥ ९ ॥

ढाल ५ मी ॥ राग रामग्री ॥ जणे मंदोदरी दैत्य दशकंधरा ॥ ए देशी ॥ चढ्यो रण झूझवा चंन्प्रद्योत नृप, चम्रतनां तुरत बाजां बजायां ॥ सुनट नट कटक चड, मटाके नेला थयां, वडव डा वागीया वेगें धाया ॥ चढ्यो० ॥ १ ॥ अथ गजवर्णनं ॥ शीश सिंदूरीया, प्रबल मदपूरीया, नमर गुंजार नीपण कपोला ॥ शुंढ उलालता, शत्रु दल पाडता, हाथीया करत हलाकलोला ॥ च० ॥ २ ॥ घंट वाजी गले, रहे एकठा मिले, मेह काली घटा जाणे दीसे ॥ ढलकती ढाल ने शीश चामर ढले, मत्त मातंग रहे नरया रीसें ॥ च० ॥ ६ ॥ हालता चालता जाणे करी पर्वता, गुहर गुंजार गंन्नीर करता ॥ चंडप्रद्यो त राजा तणा कटकमें, हस्ती लाख दोय मदवा रि झरता ॥ च० ॥ ४ ॥ अथ अश्ववर्णनं ॥ दे श काश्मीर कंबोज काबुल तणा, खेत्र खुरसाण सूधा खरंगा ॥ अवल उत्तर पवन पाणी पंथा वली, नल नला कव्वी तेजी तुरंगा ॥ च० ॥

॥ ५ ॥ नीलडा पीलडा सबल कंबोजना, रातडा रंग कविला किहाडा ॥ किरडीया कालू आधूंसरा दूसरा, हांसिला वांसिला नाग जाडा ॥ च० ॥ ६ ॥ पवन वेग पाखरघा फोज आगल धरघा, चालता जाणे चित्राम लेख्या ॥ एहवा अश्व उजेणी राजातणे, कटकमें लाख पच्चास संख्या ॥ च० ॥ ७ ॥ अथ पायक वर्णनं ॥ शिर धरे आंकडा बांहे पेहेरी कडां, नाजनी परत ना बोलवाला ॥ एकथी एकडा कटक आगल खडा, शूरवीर वांकडा सुभट पाला ॥ च० ॥ ॥ ८ ॥ सबल कांधाल मूगाल जिनसालिया, लोह मथ टोप आटोप धारा ॥ पंच हथीयार हाथे ने बाथे भिडि, भीमसम वड भला पालिहारा ॥ च० ॥ ९ ॥ तीर तरकस धरा अनंग भट आकरा, सहस जोधार संग्राम शूरा ॥ चंडप्रद्योत राजा तणे एहवा, सात कोडि साथ पायक पूरा ॥ च० ॥ १० ॥ अथ रथ वर्णनं ॥ निज निज नाम नेजा धजा फरहरे, घरहरे घोर नीशाण बाजा ॥ जरह्ह जोशाण कीया लाख बे रथ लीया, साथमें चंडप्रद्योत राजा ॥ च०॥

॥ ११ ॥ चालीया कटक जाणे चक्रवर्त्तिका, धू सरी धूल उडे गगन लागी ॥ समुद्र जल ऊछ ल्यां शेष पिण सलसल्या, गुहर गोपीनाथकी निंद जागी ॥ च० ॥ १२ ॥ इंद्रने चंद्र नागेंद्र पिण खलभल्या, लंक गढ पोलि तालां जमायां ॥ सबल सीमाल भूपाल जागी गया, चंन्डप्रद्योत राजान आया ॥ च० ॥ १३ ॥ आवीयो चंड प्रद्योत उतावलो, देश पंचालनी सीममां हे ॥ दुमुह राजा पिण देई दमामां चड्यो, आवी सा हमो अड्यो मन मछ्राहें ॥ च० ॥ १४ ॥ फोज फोजें मिली भाट भट ऊछली, सबल संग्राम भा रथ मंडाणो ॥ भटे भट मिल्या भूप भूपें भिड्या, सुभट सुभटें अड्या देखी टाणो ॥ च० ॥१५॥ मुकुट परभावें राजान जीत्यो दुमुह, कटकमां प्रगट जस पडह वागो ॥ काछ लंपट सदा कू ड कपटी तदा, चंडप्रद्योत राजान भागो ॥ च ड्यो० ॥ १६ ॥ नासतो भाजतो चंडप्रद्योत नृ प, झालि करी बेडीया मांहे दीधो ॥ कटक भां गी दशो दिशि गयुं तेहनुं, धर्म जय पाप क्ष य वचन सीधो ॥ च० ॥ १७ ॥ दुमुह राजान

आयो घरे आपणे, कहे इहां राज पंच रात प
डखो ॥ रामग्री रागनी ढाल ए पांचमी, समय
सुंदर कहे जाति कडखो ॥ च० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ एक दिन चंडप्रद्योत नृप, मदनमं
जरी दीठ ॥ काम राग विकलो थयो, लागो रं
ग मजीठ ॥ १ ॥ चिंतातुर बेसी रह्यो, नवि क
रे जोजन पान ॥ नीसासा नाखे घणा, धरे मं
जरी ध्यान ॥ २ ॥ दुमुह कहे राजा कहो, केम
चिंतातुर आज ॥ कामातुर राजा कहे, मूकी स
घली लाज ॥ ३ ॥ कामी व्याधी लोनीयो, म
द पीधो जरपूर ॥ मरतो नर ए पांचे जणा, ल
ज्जा छोमे दूर ॥ ४ ॥ मुऊने वांछे जीवतो, तो पु
त्री परणाय ॥ नहींतर पेशिश अगनिमें, वेद
ना मने न खमाय ॥ ५ ॥ पुत्री परणावी तुरत,
दुमुह लह्यो प्रस्ताव ॥ प्रारथीया पाछे नही,
उत्तम एह स्वन्नाव ॥ ६ ॥ दीधो सबलो दाय
जो, संतोष्यो सुविशेष ॥ चंडप्रद्योतन रायने,
संप्रेडयो निज देश ॥ ७ ॥

ढाल ६ ठी ॥ राग सोरठी ॥ हिवे ते दुमुह
नरिंद, निजराज पाले निर्द्वंद्व ॥ इंद्रध्वज उत्स

व ते आव्यो, राजा ढंढेरो वजाव्यो ॥ १ ॥ सहु लोक मिली मिली आव्या, इंद्रध्वज अधिक बणाया ॥ वरसो वरसें ए रीति, राजा प्रजा करी प्रीति ॥ २ ॥ ऊंचो इंद्रध्वज कीधो, दीपतो पट ऊपर दीधो ॥ वारु चित्राम विगती, रणकी सम घंटा चीति ॥ ३ ॥ दीजें जाचकने दान, गाइजें गीतने गान ॥ नानाविध वाजिंत्र बाजे, नादें करी अंबर गाजे ॥ ४ ॥ वली नाटक पडह बत्रीश, पेखंता पूगे जगीश ॥ इम सात दिन सुविचार, उत्सव कीधो अतिसार ॥ ५ ॥ पूनम, दिन पूजी अर्ची, सुविशेप घणुं धन खरची ॥ सहुको लोक ते मंदिर पोहोतां, मनमांहे अति गहगहता ॥ ६ ॥ इंद्रध्वजनी छठी ढाल, ए सोरठी राग रसाल ॥ समयसुंदर कहे सुणो एह, वैराग उपजशे जेह ॥ ७ ॥

ढाल ७ मी ॥ राग केदारो ॥ श्रेणिक राय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ ए देशी ॥ एक दिवसें राजा आवीयो, पेख्यो इंद्रध्वज तेह ॥ मलमूत्र मांहे पड्यो सडी, हाहा कुण अवस्था एह ॥ १ ॥ रे जीवडा कारिमो ए संसार ॥ वहु दुःख तणो

रे नंडाररे ॥ जीवमा० ॥ ए आंकणी ॥ माणस पगे मरदीजतो, नींजतो कीच मझार ॥ इम देखी राजा चिंतवे, अहो अथिर संसार रे ॥ जी० ॥ २ ॥ कारिमी शोना देहनी, पारके पुदगलें होय ॥ हाथथी उतारी मुद्रडी, जीव नरत नरेसर जोयरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ कारिमुं रूप संसारमां, मत करो गर्व लिगार ॥ विणसतां क्षण वेला नही, जुन चक्रवर्त्ती सनत कुमाररे ॥ जी० ॥ ४ ॥ कारिमि ऋद्धि संसारमां, क्षण मांहे खूटि जाय ॥ चंडाल घरे चाकर रह्यो, पाणी आण्यो रे हरिचंद रायरे ॥ जी० ॥ ५ ॥ कारिमुं सगपण मातनुं. दृष्टांत चुलणी जोय ॥ निज पुत्रने बालण नणी, आग दीधी मन करी कोयरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ कारिमुं राज संसारमां, दीसतां सुख एकवार ॥ सनूमनें ब्रह्मदत्त बेऊ, गया सातमी नरक मझार रे ॥ जी० ॥ ७ ॥ कारिमुं सगपण बापनुं, कीयो कनक नर अनर्थ ॥ आपणो अंगज छेदीयो, ज्ञातासूत्रें एह अर्थ रे ॥ जी० ॥ ८ ॥ कारिमुं सगपण बापनुं, कोणीकें कीधुं पाप ॥ श्रेणिक काठ पंजर दीयो, नि

त्य नाडी मरायो बापरे ॥ जी० ॥ ९ ॥ कारिमुं सगपण बंधुनुं, जीव जोयें हृदय मझार ॥ ते भरत बाहुबल झिड्या, एक एकनेरे दीधा प्रहारे ॥ जी० ॥ १० ॥ कारिमुं सगपण नारिनुं, पति मारिका दृष्टांत ॥ भरतार मारयो आपणो, मांस नाखणरे गई एकांतरे ॥ जी० ॥ ११ ॥ कारिमुं सगपण कंतनुं, नलें कीयो सबल अन्याय ॥ वन मांहे दमयंती तजी, हाहा अबला रही विललायरे ॥ जी० ॥ १२ ॥ कारिमुं सगपण बंधव मित्रनुं, मारीयो पर्वत राय ॥ मित्र द्रोही कीधो चाणकें, नंदराज दीयो केहेवायरे ॥ जी० ॥ ॥ १३ ॥ कारिमुं सगपण सर्वनुं, सुभूम राम प्रकार ॥ निःक्षत्र निर्ब्राह्मण करी, जेणें पृथ्वि एकवीश वाररे ॥ जी० ॥ १४ ॥ संसार सघलो कारिमो, जीव जाणतो ए मर्म ॥ स्वारथ विना विहडे सहु, एक विहडे नहीं जिनधर्म रे ॥ जी० ॥ ॥ १५ ॥ वैराग्य इणी परें आवियो, ऋद्धि त्यजी तृण जेम जेण ॥ वेश दीउ शासन देवता, व्रत लीधुं रे दुमुह नृप तेण रे ॥ जी० ॥ ॥ १६ ॥ ए राग केदारे कही, सातमी ढाल र

साल ॥ गणी समयसुंदर इम कहे, मोरी वंदना होजो त्रिकाल रे ॥ जी० ॥ १७ ॥

ढाल ८ मी ॥ राग धन्याश्री ॥ शील कहे जग हुं वडो ॥ ए देशी ॥ दुमुह नामे मुनिवर नमुं, बीजो प्रत्येक बुद्धोरे ॥ प्रतिबुझयो इंद्रध्व ज थकी, संजम पाले मन सूधोरे ॥ दु० ॥ १॥ ए आंकणी ॥ संवेग मारग आदरयो, विचरयो वली देश विदेशोरे ॥ भविक जीव प्रति बोध वा, आपे धर्म उपदेशोरे ॥ दु० ॥ २ ॥ गुण गातां मन गहगहे, सुणतां चित्त हर्ष अपारो रे ॥ चोथे खंडें एकठा होशे, हुं गाइश सुगुण विस्तारोरे ॥ दु० ॥ ३ ॥ संवत सोले चोशठ स मे, चैत्रवदि तेरश शुक्रवारोरे ॥ बीजो खंड पु रो थयो, श्री आगरा नगर मझारोरे ॥ दु० ॥ ॥ ४ ॥ बडोगच्छ खरतर तणो, गुरु युगप्रधान जिणचंदोरे ॥ श्री जिनचंद सूरीसरो, प्रतपो बे सूरज चंदोरे ॥ दु० ॥ ५ ॥ सकलचंद सुपसा उले, में पूरो कीधो खंडोरे ॥ समयसुंदर कहे सं घनो, सदा तेज प्रताप अखंडोरे ॥ दु० ॥ ६ ॥ ढाल भणी ए आठमी, धन्याश्री रागें सोहेरे ॥

समयसुंदर कहे गावतां, नर नारीना मन मोहे रे ॥ दुमु० ॥ ७ ॥ इति श्री ॥ दुमुह नृप प्रत्येकबुद्धचरित्रे द्वितीय खंड संपूर्णः ॥

॥ अथ नमिराजाको तृतीय रास लिख्यते ॥

दुहा ॥ मूल मंत्र समरुं सदा, पंच जिहां परमिठ ॥ बावन अक्षर मांहे तसु, तिलक मुकुट सिरि दिठ ॥ १ ॥ हिवे त्रीजो खंड नमि तणो, जोडण जागी बुद्ध ॥ चिंतवित पाम्या पगी, पात्र मिले तो सिद्ध ॥ २ ॥ साधुतणा गुण वर्णतां, करतां निर्मल देह ॥ गंगाजलमां झिलतां, केम रहे तनुनी खेह ॥ ३ ॥ साधु कथा सहेजें भली, अधिक ढाल रस एह ॥ विच विच मेवाने मरकी, साखर मीठाइ तेह ॥ ४ ॥ साधु चरित्र सुणतां थकां, मुगती तणा फल होय॥ गरथ न लागे गांठनुं, तेणे सुणजो सहु कोय ॥ ५ ॥

ढाल १ ली ॥ गांगा मीणारा थारी मृगली ॥ ए देशी ॥ जंबू द्वीप सोहामणो, क्षेत्र भरत रसाल ॥ देश अवंती दीपतो, कदी न पडे दुष्काल ॥ १ ॥ नगर सुदर्शन अति भलुं, बहु ऋद्धि समृद्धि ॥ वारु वसे व्यवहारीया, देश देश

परसिद्ध ॥ नगर० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ उंचा मंदिर मालीयां, उंचा प्रासद ॥ दंरु उपर ध्वज लहलहे, करे स्वर्गशुंवाद ॥ नगर० ॥ ३ ॥ अं तेउर जाणे अपछरा, इंद्रे मूकी आणी ॥ दैत्य थकी डरता थकां, निर्नय ठाम जाणी॥न०॥४॥ किहां किणे राज सन्ना जडी, मुहता परधान ॥ शेठ सेनापति सूत्रवी, खोजा ने खान ॥ न० ॥ ॥ ५ ॥ किहां कणे छत्र धरावतो, बेठो नूपाल॥ हुकुम चलावे आपणो, माने बाल गोपाल ॥ न० ॥ ६ ॥ किहां कणे नूप आगल नला, व ढे जेठी मल्ल ॥ हुशीयार रहे हिवे रामला, वाहे वली गल्ल ॥ न० ॥ ७ ॥ किहां कणे शुंढ उला लता, झरतां मदवार॥ सुंदर शशि सिंदूरीया, घूमे दरबार ॥ न० ॥ ८ ॥ किहां कणे घोडा जु लमती, सोवन जडित पलाण ॥ ताजा तेजी हीं सता, दीसे दीवाण ॥ नगर० ॥ ९ ॥ किहां क णे वली पायक लडे, सामे हथीयार ॥ एक वा हे घाव एकने, एक टालणहार ॥ नगर० ॥१०॥ किहां कणे घडीयाला घमी, वाजे वारंवार ॥ का ल जणावे लोकने, रेहेजो हुशियार ॥ नग० ॥

॥ ११ ॥ किहां कणे वली नोबत तणा, वाजे नीशाण ॥ जागो रे जागो धर्म करो, लोकने करे जाण ॥ न० ॥ १२ ॥ किहां कणे कनक रूपातणी, पडे तिहां टंकशाल ॥ गंज खजाना उपर रहे, बहुत रखवाल ॥ न० ॥ १३ ॥ किहां कणे बेठा चउतरे, काजी कोटवाल ॥ ऊगडो न्नांजे लोकनो, न लीये लाच विचाल ॥ न० ॥ १४ ॥ किहां कणे दोशी कापडा, वेचे पटकूल ॥ जेम तेम साटुं मेलवे, दलाल वातुल ॥ नगर० ॥ १५ ॥ किहां कणे बेठा जवेहरी, जवाहीर लेई जोय ॥ मोती माणक लालडे, लान पामे सोय ॥ नगर० ॥ १६ ॥ किहां कणे मांड्यां कंदोईए, सूखडी बहु हाट ॥ गुंदवडां पेडा न्नला, दीठे गले दाढ ॥ नगर० ॥ १७ ॥ किहां कणे सखरा सुरहीए, चूत्र्या चंपेल ॥ महमहता मांड्या घणां, मोगरेल फूलेल ॥ न० ॥ ॥ १८ ॥ किहां घंटा रणके देहरे, जिनबिंब विचित्र ॥ श्रावक स्नात्र जूजा करे, करे जन्म पवित्र ॥ न० ॥ १९ ॥ किहां वली साधुने साधवी, बेठां पोशाल ॥ दिये न्नवियणने देशना,

वांचे सूत्र रसाल ॥ न० ॥ २० ॥ किहां वली आंक भणे घणा, नीशालें बाल ॥ छ दु बारें मुखें कही, धडो दे ततकाल ॥ नग० ॥ २१ ॥ किहां काजी मुल्लां पढे, किताब कुराण ॥ किहां वली ब्राह्मण वेदीया, भणे वेद पुराण ॥ न० ॥ ॥ २२ ॥ किहां बजार बाजी पडे, किहां गीतने गान ॥ किहां पवाडा गाईयें, किहां दीजें दान ॥ न० ॥ २३ ॥ किहां वली नगरनी नायका, बैठी आवास ॥ हाव भाव विभ्रम करी, पाडे नर पास ॥ न० ॥ २४ ॥ किहां वली मोती प्रोईयें, किहां फिटकनी माल ॥ किहां परवाला काढीयें, हींगलो हरियाल ॥ नगर० ॥ २५ ॥ किहां धानना ढिग मांडीया, किहां खंडना गंज ॥ किहां घी तेल कूंपा भरया, किहां काष्टना पुंज ॥ न० ॥ २६ ॥ चउराशी चउठा भला, भली पोल प्रकार ॥ भली बाजार त्रिपोलिया, भला सकल प्रकार ॥ न० ॥ २७ ॥ नगर सुदर्शन वर्णना, ए पेहेली ढाल ॥ समयसुंदर कहे हिवे कहुं, तिहां कोण भूपाल ॥ न० ॥ २८ ॥

ढाल २ जी ॥ नयण सलूंणी रे गोरी नागी

ला ॥ ए देशी ॥ मणिरथ राजा राज करे तिहां, लघु बंधव युव राज रे ॥ जगबाहु राजा घरे ना रजा, करे अनोपम काजरे ॥ १ ॥ शीयल सु रंगी रे मेणरह्या सती ॥ ए आंकणी ॥ रूपे रं नसमानो रे, विनय विवेक विचारे आगलो, च उसठ कला सुजाणो रे ॥ शीयल० ॥ २ ॥नाण विनाण विचक्षण गुणनिलो, चंद्रजस पुत्र प्रधा न रे ॥ युगबाहु राजानो अति घणो, मेणरह्या ने मानरे ॥ शीयल० ॥ देव तो अरिहंत गुरु सूधा जति, केवली नाषित धर्मरे ॥ सूधो सम कित पाले श्राविका, नांजे मिथ्यनर्मरे॥शी०॥ ॥ ४ ॥ जीव अजीव प्रमुख नव तत्वना, जाणे नेद विचाररे ॥ पुण्यवंत पाले अतिनिर्मलां, श्रावकनां व्रत बाररे ॥ शीय० ॥ ५ ॥ अशन पान खादिम स्वादिम वली, फासुक शुद्ध आ हारो रे ॥ वस्त्र पात्र उपध नैषज्य करी, पडि लान्ने अणगारो रे ॥ शीय० ॥ ६ ॥ मुख पून मनो जाणे चंदलो, मृगलोचन आणीयालरे ॥ नासिका दीपशिखा जेम दीपती, कोकिल कंठ रसाल रे ॥ शीय० ॥ ७ ॥ राजहंस जेम चाले

मजपती, केसरी सम कटिलंकरे ॥ सरस वचन चतुराई गुण घणा, एक नही कोइ बंक रे ॥शीयल० ॥ ८ ॥ एक दिन दीठुं मेणरहया तणुं, एहवुं सुंदर रूप रे ॥ काम राग नेद्यो चित्त नींतरें, चिंतवे मणिरथ नूपरे ॥ शीय० ॥ ९ ॥ मेणरहया गोरी मिलवा नणी, करुं कोइ दाय उपायरे ॥ काम नोग इणशुं नोगव्या विना, निःफल जमवारो जाय रे ॥ शीय० ॥ १०॥ मेणरहयाने मूके नेटणां, नलां नलां फलने फूलरे ॥ चीर पटोली चरणा चूनमी, आनरण अति नहुमूलरे ॥ शीय० ॥ ११ ॥ मेणरहया लेइ सघलुं नेटणुं, जाणे जेठ प्रसादरे ॥ राजा जाणे मन मान्युं सही, लागो प्रीतिसवादरे ॥ शीय० ॥ ॥ १२ ॥ प्रार्थना करी नृपें एकदा, सती रही दृढ चित्तरे ॥ मेणरहया मणिरथ राजा नणी, दियो उपदेश पवित्त रे ॥ शीय० ॥ १३ ॥ राजा मात पिता सरिखा कह्या, प्रजा तणा आधार रे ॥ आप अन्याय करे जो एहवो, तो किहां कीजें पूकाररे ॥ शीय० ॥ १४ ॥ वली नारीनें पांच पिता कह्या, राजा सुसरो शेठरे ॥ला

जी मरियें प्रीतें बोलतां, जनम पिताने जेठ रे॥ शीय० ॥ १५ ॥ शीयल रतन राजन कि म खंमीयें, जोई चित्त विमास रे॥ इह नव अ पजस वाधे अति घणो, परनव दुर्गति वासरे॥ शीय० ॥ १६ ॥ जुगबाहु तुऊ नाई अति न लो, मुऊ माथे नरताररे ॥ जेठ विचारी जूउ ए हनी, केम लोपीजें काररे ॥ शीय० ॥ १७ ॥स तीय वयण सुणी राजा चिंतवे, मौन करी रहुं आजरे ॥ जुगबाहु बांधव मास्यां विना, सरशे नहीं नेट काजरे॥ शीय० ॥ १८॥ बीजी ढाल नणी मेंएहवी, प्रश्न पडुत्तर साररे॥समयसुंदर कहे हिवे तुमें सांनलो, गर्नतणो अधिकाररे॥ शी०॥१९॥

ढाल ३ जी ॥ सुगुण सनेही मेरे लाल, विनति सुणो मेरे कंत रसाल ॥ ए देशी ॥ ए क दिन मेणरहया तिणे अवसरें, निश नर सू ती आपणे मंदिर ॥ सुपने पेखे पूनम चंदा ॥ जागत प्रगट्यो परमाणंदा ॥ १ ॥ चंद सुप न चित्तमांहि धरती, चाली निज पियुपासें निर ती ॥ राजहंस जेम लीला करती, ठम ठम अं गण पगलां नरती ॥ २ ॥ आपणा पीयुनी पा

सें आवे कोमल वचनें कंत जगावे ॥ मेणरहया बोले अति मीठो, चंदसुपन स्वामी में दीठो ॥ ॥ ३ ॥ सुंदर शोल कला संपूरण, तापसंताप तिमिरजय चूरण॥ गगन मंडलथी ते उतरतो, दीठो वदन प्रवेश करंतो ॥ ४ ॥ तेह तणुं फल कहो मुज स्वामी, हुं पूछुं तुमने शिर नामी॥ वनिता वचन सुणी नृप हरख्यो, कहे तें सुपन जलो अति निरख्यो ॥ ५ ॥ सुपन एह तणे अनुसारें, पुत्र होशे परधान तुम्हारे ॥ तहत्ति करी राणी घर आवे, सुख जोगवती काल गमावे ॥ ६ ॥ त्रीजे मासें ऊपनो मोहलो, गर्जेव तीने एहज सोहिलो ॥ जाणे जिनवर पूजा कीजें, साधु समीप वखाण सुणीजें ॥ ७ ॥ उत्तम दान सुपात्रें दीजे, इणी परें लिखमी लाहो लीजें ॥ उत्तम गर्ज तणे परजावे, माता उत्तम डोहलो पावे ॥ ८ ॥ अधम गर्ज पेटें जो आवे, माने ईट लीहाला जावे ॥ होंश करे माटी खावानी, चोरीयें पेसी गानी मानी ॥ ९ ॥ जला जला डोहला उपना जेह, मेणरहया पूराणा तेह ॥ त्रीजी ढाल कही ए सार, समय सुंदर

कहे सुपन विचार ॥ १० ॥

ढाल ४ थी ॥ झुंबखडानी देशी ॥ तिणे अवसरें सोहामणो, आयो मास वसंत ॥ सुरंगां खेलणां॥रसिया खेले बागमें, गाये राग वसंत॥ सुरंगां० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ बोलसिरी जाई जूई, कुंद अने मुचकुंद ॥ सु० ॥ चंपक पाडल मालती, फूली रह्यां अरविंद ॥ सु० ॥ २ ॥ दमणो मरूत्र मोघरो, सब फूली वनराय ॥ सु०॥ एक न फूली केतकी, पीयु विण हर्ष न थाय ॥ सु० ॥ ३ ॥ आंबा मोरया अति घणा, मांजर लागी सार ॥ सु० ॥ कोयल करे टहुकडा, चिहुं दिशि भ्रमर गुंजार ॥ सु० ॥ ४ जुगबाहु रमवा चल्यो, मयणरहया लै साथ ॥ सु० ॥ बाग मांहि रमे रंगशुं, डफ धरयुं निज हाथ ॥ सुरंगां०॥५॥ निर्मल नीर खंभो खली, झीले राज मराल ॥ सु० ॥ प्रेमदाशुं प्रेमें रमे, नाखे लाल गुलाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ भोजन भक्ति युक्ति भली, करतां थइ अवेर ॥ सु० ॥ रात पभी रवि आथम्यो, पसरयो प्रबल अंधेर ॥ सु० ॥ ७॥ निर्भय ठाम जाणी रह्यो, रातें बाग मझार ॥

॥ सु० ॥ केलीघर सूतो नृप, थोमोशो परिवार ॥ सु० ॥ ८ ॥ चोथी ढाल पूरी थई, फुंत्रख मानी जात ॥ सु० ॥ समयसुंदर कहे हिवे सुणो, रातें होशे जे वात ॥ सु० ॥ ९ ॥

ढाल ५ मी ॥ अवसर जाणी इंद्र ॥ ए देशी ॥ हिवे मणिरथ पापिष्ट, चित्तमांहे चिंतवे, अवसर आज जलो मिल्यो ए ॥ एक थोडो परिवार, बंधु बाहिर रह्यो, राति तिमर जय वन जल्यो ए ॥ १ ॥ आज जाउं वनमांहि, मारी सहोदर, मे ारहया मंदिर धरुंए ॥ जोगवुं जोग संजोग, मनोवंछित सुख, मेणरहया घरणी करुं ए ॥ ॥ २ ॥ इम चिंतवी चित्तमांहि, वनमांहे गयो, पूछ्युं मणिरथ पाहरु ए ॥ कहो किहां बांधव मुज, केन बाहेर रह्यो, हुं आयो रक्षा करुं ए ॥ ॥ ३ ॥ केलीघर गयो राय, फबकि ससंभ्रम, जुगबाहु उजो थयो ए ॥ प्रणम्या बंधव पाय, राय वचन सुणी, दुशमन जय दूरें गयो ए॥ ४ ॥ चल तुं नगर मफार, वनें रहेशो नही, इम कही अवसर अटकल्यो ए ॥ दीधो खड्ग प्रहार, छेदी कंधरा, जुगबाहु धरणी ढल्यो ए ॥ ५ ॥

न गएयो बांधव प्रेम, न गएयो अपयश, पर
ज्ञव ज्ञर पिए नवि गएयो ए ॥ न गएयुं पाप
अखत्र, न गएयुं परदुःख, मणिरथ निजबांधव
हएयो ए ॥ ६ ॥ पाडी बूंब पूकार, मेणरहया
सती, हाहा अनरथ कुए कियो ए ॥ धाया पा
हरू लोक, पूछियुं मणिरथ, केण प्रहार पापी दी
यो ए ॥ ७ ॥ कहे मणिरथ पापिष्ट, माहारा हा
थथी, पडतुं खड्ग जाएयुं नहीं ए ॥ इंगित ने
आकार, सहु जाएयुं इम, नृप अनरथ कीधो
सही ए ॥ ८ ॥ कामथकी बहु क्लेश, मन चंचल
जदा, कामथकी अनरथ घणा ए ॥ समयसुं
दर कहे एम, ढाल ए पांचमी, हिवे कहुं काम वि
टंबना ए ॥ ९ ॥

ढाल ६ ठी ॥ राग सारंग ॥ प्राण पीयारे
कां तजी ॥ ए देशी ॥ धिक धिक कामविटंबना,
देखे नही कामांधोरे ॥ कामथकी अनरथ घणा,
पूरब सुणि प्रबंधोरे ॥ धि० ॥ १ ॥ रावण सी
ता अपहरी, कीधो ज्ञुंडो कामो रे ॥ लंकागढ
लूटावीयो, छेद्यां दश शिर रामोरे ॥ धि० ॥२॥
आर्द्र कुमार मुनीश्वरो, मूकी संजम ज्ञारो रे ॥

श्रीमतीशुं सुख भोगव्युं, वरस चउवीश अपा
रो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ पांचशें नारी जेणें तजी,
कनकवृष्टि करी जेणोरे ॥ वेश्यावचन विलास
थी, चूक्यो श्रीनंदिषेणो रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ वि
हरण वेला पांगुरयो, अरहन्नो सुकुमालोरे ॥ गो
ख बोलाव्यो गोरडी, ते लूब्धो ततकालोरे ॥
धि० ॥ ५ ॥ सिंहगुफावासी यति, गयो नेपाल
सुदेशोरे ॥ रतनकंबल कीयुं भेटणुं, कोण कोण
सह्या कलेशो रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ आषाढभूति मा
हामुनि, बहुबुद्धि लब्धि भंडारोरे ॥ भूवन सुंदर
जयसुंदरी, नटवीशुं घरबारो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥
पेट पीडा मिशें प्रारथे, श्रमण शेकावे पेटरे ॥
साधु सबल तपसी हुंतो, काम विटंब्यो नेटो रे
॥ धि० ॥ ८ ॥ चित्त चूक्युं रहनेमिनुं, चरम श
रीरी जेहो रे ॥ गुफामांहि राजुल तणो, देखी
उघाडो देहो रे ॥ धि० ॥ ९ ॥ साधु हुतो कुल
वालुउ, वेश्यालुब्धो जेहोरे ॥ थूभ पडाव्यो जि
न तणो, अनरथ कीधो एहो रे ॥ धि०॥१० ॥
साधवी पिण सुकुमालिका, मूकी मसाण वासो
रे ॥ सारथवाहशुं घर कीयुं, भोगव्या भोग वि

लासोरे ॥ धि० ॥ ११ ॥ दमयंती देखी करी, चूको नल अणगारो रे ॥ चेलणा रूप देखी च ल्यो, वीर तणो परिवारोरे ॥ धि० ॥ १२ ॥ चू ल्यो पुत्री प्रजापति, अहिल्या चूल्यो इंदोरे ॥ जननीशुं जाल्हण चुल्यो, नागिनीशुं अहिछंदोरे ॥ धि० ॥ १३ ॥ इम अनेक जोगी जति, चू क्या कर्मविशेषोरे ॥ तेम चूक्यो मणिरथ इहां, मेणरहया रूप देख्योरे ॥ धि० ॥ १४ ॥छठी ढाल पूरी थई, कह्या केता अधिकारोरे ॥समयसुंदर क हे धन्य तिके, पाले शीयल उदारोरे धि०॥ १५ ॥

दुहा ॥ हिवे मणिरथने पाहरु, जोरें नगर ले ई जाय ॥ निरतिकरी चंद्रजस भणी, वैद्य तेडी वन धाय ॥ १ ॥ चंद्रजस पिण आव्यो तिहां, करतो मुख आक्रंद ॥ गाबडी बंधावतां, नृपति थयो निःफंद ॥ २ ॥ अंगे उपनी वेदना, रुधि र विछूटां खाल ॥ क्षणमां लोचन मिलिगयां, वा च रही ततकाल ॥ ३ ॥ मरण समे जाणीकरी, मेणरहया बहुमान ॥ मन दृढ करी मधुरे स्वरें, धर्म सुणावे कान ॥ ४ ॥

ढाल ७ मी ॥ वणझारानी देशी ॥ मोरा प्री

तमजी तुं सुण एक मोरी शीख ॥वालमजी सुण एक मोरी शीख॥ तुं मन समाधिमांहे राखजे, मोराजीवनजी ॥ मोरा प्रीतमजी तुं खामे सघला जीव ॥ वाल० ॥ नेद चउराशी लाख जे ॥ मोराजी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मोरा प्रीतमजी तुं मत करे राग न द्वेष ॥ वाल० ॥ तुं शत्रु मित्र सरिखा गिणे ॥मोरा० ॥ मोरा प्री० ॥ तुं दे जे कर्मने दोष ॥ वाल० ॥ तुं अंतरंग वयरी हणे ॥ मोरा० ॥ २ ॥ मोरा प्रीत० ॥ ताहरे देव एक अरिहंत ॥ वाल० ॥ तु गुरु सुसाधु हियडे वहे ॥ मोरा जी० ॥ मोरा प्री० ॥ ताहरे केवलीनापित धर्म ॥ वाल० ॥ तुं तो समकित सूधुं सद्दहे ॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ तुं दश दृष्टांतें जाण ॥ वाल० ॥ ए मनुष्य तणो नव दोहिलो ॥ मो० ॥ मो० ॥ जो इणे नवें कीजें पुण्य ॥ वाल० ॥ तो परनव सुख सोहलो ॥ मो० ॥ ॥४॥ मोरा० ॥ तुं पनरह कर्मादान ॥ वाल० ॥ वली पाप अठारह परिहरे ॥ मोरा० ॥ मोरा० ॥ तुं सुकृत किया अनुमोद ॥ वाल० ॥ तुं दुःकृत तणी गर्हा करे ॥ मो० ॥५॥ मोरा० ॥

ताहरे मारग छे अति दूर ॥ वा० ॥ तुं संबल
साथे घालजे ॥ मो० ॥ मोरा० ॥ ताहरे पग पग
चोरनी धाड ॥ वाल० ॥ तुं तेहथी साहिरो रहे॥
॥ मो० ॥ ६ ॥ मोरा० ॥ तुं हिंसा मृषा वाद ॥
वा० ॥ तुं अदत्तादानथी उसरे ॥ मोरा० ॥ मो
रा प्री० ॥ तुं परिग्रह आरंभ पाप ॥ वाल० ॥
तुं त्रिविध त्रिविध करी परिहरे ॥ मो० ॥ ७ ॥
मोराप्री० ॥ तोरी अंतअवस्था एह ॥ वा० ॥
तुं धर्में दृढ करजे हियुं ॥ मोरा० ॥ मो० ॥ तुं
सद्दहजे मनशुद्ध ॥ वाल० ॥ तुने चउविहार
अणसण दीयुं ॥ मो० ॥८ ॥ मोरा० ॥ एक
साचो श्री जिनधर्म ॥ वाल० ॥ ताहरे अवर स
हु को अथिर छे ॥ मो० ॥ मो० ॥ तुं मरण त
णो भय माण ॥ वा० ॥ तुं जोय जगत कुण अ
मर छे ॥ मो० ॥ ९ ॥ मोरा० ॥ तुं शरणां क
रजे चार ॥ वा० ॥ श्री अरिहतं सिद्ध सुसाधु
जे ॥ मो० ॥ मोरा० ॥ तुं केवलि भाषित धर्म
॥ वा० ॥ ए चारे ॥ आराधजे ॥ मो० ॥ १० ॥
मोराप्री० ॥ तुं ध्यान धरे नवकार ॥ वा० ॥
जिमकाज सरे पियुं ताहरुं ॥ मोरा० ॥ मो० ॥

एह संसार असार, तुं मोह मत करजे माहरो ॥ मो० ॥ ११ ॥ मोरा ॥ इम मेणरहया उपदेश ॥ वा० ॥ ते साचो सघलो सद्दह्यो ॥ मो० ॥ मोरा० ॥ ए जुगबाहु युवराज ॥ वाल० ॥ ते काल करी परभव लह्यो ॥ मोरा० ॥ १२ ॥ मो० ॥ धन्य मेणरहया ए नारी ॥ वा० ॥ इण अवसर काज समारियुं ॥ मोरा० ॥ मोरा० ॥ जेणें आपणडो भरतार ॥ वाल० ॥ उपदेश देई निस्तारीयो ॥ मोरा० ॥ १३ ॥ मोरा० ॥ ए सातमी ढाल रसाल ॥ वाल० ॥ जुगबाहु शरणां तणी ॥ मोरा० ॥ मोरा० ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ वाल० ॥ विवे मेणरहया वात छे घणी ॥ मो० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ पितामरण जाणी करी, चंद्रजसा करे पूकार ॥ आंखें बहु आंसु झरे, करे विलाप अपार ॥ मेणरहया इम चिंतवे, धिग् धिग् माहारूं रूप ॥ इणथी अनरथ उपन्यो, मार्‍यो प्रीतम भूप ॥ २ ॥ मत मारे मुझ पुत्रने, मणिरथ म्हारे काज ॥ शील रतन राखण भणी, जाउं किणे दिशि भाज ॥ ३ ॥ इम मनमांहि चिंतवी, समजावी सुत सार ॥ निशिभर चाली

एकली, पूर्व दिशि सुविचार ॥ ४ ॥

ढाल ८ मी ॥ मोहनगारोरे नंदिखेण नाह लो ॥ ए देशी ॥ निशि नर चालीरे मेणरहया सती, एकली अबलारे नार ॥ पूर्व दिशि सामां मन शंकती, पेठी अटवी मझार ॥ १ ॥ मेणरहया निशि चाली एकली, राखण शीलरतन ॥ ए आंकणी ॥ किहां जई काज समारुं जीवनं, करुं वली कोडी जतन ॥ मेणरहया० ॥ २ ॥ खरे मध्यान्हें सरोवर देखीयुं, लीधो तिहां विश्राम ॥ फल फूल भक्षण करी पाणी पीयुं, सूती कदली ठाम ॥ मे० ॥ ३ ॥ सागारी अणसण मुखें उच्चर्‍यो, राति पडी ततकाल ॥ सिंह वाघ गुंजे विहामणा, बोले बहुलां शीयाल ॥ मेण० ॥ ४ ॥ आधी रातें पेटपीडा थई, जायो पुत्र प्रधान ॥ शुभलक्षण संपूरण गुणनिलो, सुंदररूप निधान ॥ मेणरहया० ॥ ५ ॥ रतन कंबल नामांकित मुद्रडी, वींटी बाल शरीर ॥ सती सरोवर प्रभातें गई, शुचि करवा निज चीर ॥ मेण० ॥ ॥ ६ ॥ वस्त्र धोई पेठी वली स्नानने, तिण वेला दुर्दंत ॥ पाणी मांहेथी गज नीसर्‍यो, जा

ऐ काल कृतांत ॥ मे० ॥ ७ ॥ तिणे गजें शुं
डादंडें ग्रही करी, ऊगाली आकश ॥ दैवयोगें
दीठी विद्याधरें, ऐ ऐ रूप प्रकाश॥ मे० ॥ ८ ॥
पडतां झाली तिणें विद्याधरे, करती कोमी विला
प ॥ वैताढ्यपर्वतें लेई गयो, पिण मनमांहि पाप
॥ मे० ॥ ९ ॥ मेणरहया कहे सुण विनति, मुझ
मनें दुःख अनेक ॥ ते दुःख केहेतां फाटो पडे
हीयुं, पिण सांभल दुःख एक ॥ मे० ॥ ११ ॥
आजरातें वनमां में जण्यो, बालक पुण्य पवि
त्त ॥ केलीघर मूकी हुं गई, सरोवर स्नान नि
मित्त॥ मे० ॥ ११ ॥ जलहाथी ऊगाली तें ग्रही,
पिण बालकनी कीणवात ॥ विण धवराव्यो मर
शे टलवली, के कोई करशे घात ॥ मेण० ॥
॥ १२ ॥ तेणें मुझने पोहोंतीकर तिण वनें, अ
थवा बालक आण ॥ पारथीया उत्तम पहिडे न
ही, जनम सफल तसु जाण ॥ मे० ॥ १३ ॥
कहे विद्याधर कामातुर थको, जो मुज करे भ
रतार॥तो तुं वचन कहे ते हुं करुं, विच्चे साखी
किरतार ॥ मे० ॥ १४॥ आठमी ढाल सबल सं
कट पडी, दुःखमांहे वली दुःख॥समयसुंदर भाखे

विण नोगव्यों, करम तणुं नहीं मुख ॥ मे० ॥ १५ ॥
दुहा ॥ वलतुं विद्याधर नणे, सुण सुंदरी ससनेह ॥ देश गंधार मांहे नलुं, रत्नावह पुर एह ॥ १ ॥ विद्याधर राजा तिहां, मणिचूड म ह मतिवास ॥ पटराणी पद्मावती, मणिप्रन हुं सु त तास ॥ २ ॥ दक्षिण उत्तर श्रेणिनी, राज ऋद्धि सवि गेडी ॥ मुऊ पिता संजम लीयो, मोह तणुं दल मोमी ॥ ३ ॥ चारित्रियो चारण श्रमण, करतो कर्मनुं सूड ॥ काले इहां आव्यो हतो, विहरंतो मणिचूम ॥ ४ ॥ हिवे ते नंदी श्वरें गयो, प्रतीमा वंदनकाज ॥ तसु समीप जा ते थके, में तुज अपहरी आज ॥ ५ ॥ वात क हुं वली ताहरी, पुत्र तणी अनिराम ॥ माने बो ल तुं माहरो, पूरे वंछित काम ॥ ६ ॥ वक्र तुरं गम अपहस्यो, मिथिला नगरी राय ॥ तेणें व नें दीठो ताहरो, पुत्र अनोपम काय ॥ ७ ॥ घ र आणी राणीनणी, दीधो पुत्रप्रधान ॥ पंच धा यें पाली जतो, दिन दिन वाधे वान ॥ ८ ॥ प्र ज्ञप्ति विद्यायें कह्यो, पुत्र तणो विरतंत ॥ नोग व नोग संजोग तुं, मुऊशुं मन एकंत ॥ ९ ॥

हुं तुझने छोडुं नही, हिवे तुं माहारे हाथ॥ तन धन जोबन रूपनुं, फल भोगव मुज साथ॥१०॥

ढाल ९ मी ॥ राग मालवी गोडी ॥ तुंगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ सुणी वचन सराग तेहनां, सतीय चिंते एमरे ॥ सबल संकट पडी हूं हिवे, शील राखुं केमरे॥१॥ मेणरहया शील राख्युं, पडि संकट जेणरे ॥ दिनप्रत्यें प्रभातें उठी, नाम लीजें तेणरे॥मेण०॥ ॥२॥ ए आंकणी ॥ में जे कर्म कठोर कीधां, उदय आव्यां तेहरे ॥ आपदा मांहे पडी आपद, हजी नावे छेहरे ॥ मे० ॥ ३ ॥ हुं अनाथ अप्राण अबला, कांइ न चाले जोररे ॥ शील राखण भणी भाखुं, करुं एक निहोर रे ॥ मे० ॥ ॥ ४ ॥ सती भाखे सुण विद्याधर, नंदीसर लेइ जायरे ॥ पछी मानीश वचन ताहरुं, जोरें प्रीति न थायरे ॥ मे० ॥ ५॥ इम सुणी हर्षित हुउ खेचर, रचियुं देवविमानरे ॥ साथें लेई चाल्यो विद्याधर, नंदीसर असमानरे ॥ मे० ॥६॥ तिहां जाइ जिनवर बिंब पूज्यां, ऋषभानन वर्द्धमानरे ॥ चंद्रानन वारिषेण नामें, धनुष्य पंच

शत मानरे॥ मे० ॥ ७ ॥ मणिचूड मुनिने वांदी बेठा, बेऊ आगल आयरे ॥ चार नाणी वात जाणी, सुत लियो समझाय रे॥ मे० ॥ ८॥ कर जोडी मणिप्रन कहे सुण सती, खमे मुझ अप राधरे ॥ आजथी तुं बहेन माहरी, बुझव्यो इ णें साधरे ॥ मे० ॥ ९ ॥ तुं कहे ते वली करुं कारज, बेहेन दे आदेशरे ॥ सती कहे तें सर्व कीधुं, यात्रा पुण्य विशेषरे ॥ मे० ॥ १० ॥ स ती शील रह्युं अखंमित, गयुं संकट दूररे ॥ ढाल नवमी समयसुंदर, नणे आणंद पूररे॥मे०॥११॥

दुहा ॥ मेणरहया मुनिवर नणी. पूछे प्रण मी पाय ॥ वात कहो मुझ सुत तणी, नगवन करो पसाय ॥ १॥ कहे मुनिवर सुण श्राविका, पुरव नव विरतंत ॥ जेम तुझ अंगज अवत र्यो, तिम हुं कहिशुं तंत ॥ २ ॥

ढाल १० मी ॥ चोपाईनी देशी ॥ जंबुद्वीप पूर्व सुविदेह, पुखलावती विजय गुणगेह ॥ ति हां मतितोरण नगर उदार, गढ मढ मंदिर पो ल प्रकार ॥ १ ॥ चक्रवर्त्ति पदवी नोगवे राय, अजितजसा नामें केहेवाय ॥ तसु घर पुष्प

वती पट राणी, अद्भुत रूप जाणे इंद्राणी॥२॥
तेहने पुत्र बे पुण्य प्रमाण, पुष्पसिंह रत्नसिंह
चतुर सुजाण ॥ चउराशी पूरव लख राज, पा
ली सार्यां आतम काज ॥३॥ चारण श्रमण य
तिनी पास, दीक्षा लीधी मन उल्हास ॥ शोल
पूर्व लख वरसां सीम, तप जप संजम कीधा
निःसिम ॥ ४ ॥ ते पोहोतां बारमे देवलोक, पु
ण्य तणां फल पाम्या रोक ॥ सामानिक देवता
केहेवाय, बावीश सागर जोगवी आय ॥ ५ ॥
तिहांथी चवीने धातकी खंड, जरतमांहे हरिषे
ण प्रचंड ॥ अर्ध चक्री राजा अजिराम, समुद्र
दत्ता तस जार्या नाम ॥ ६ ॥ तेहनें पुत्र थया
सुपवित्त, सागर देवनें सागरदत्त ॥ बारमो जिन
दृढ सुव्रत स्वाम, तस पासें साधु थया हितका
म ॥ ७ ॥ त्रीजे दिन थयो वीजली पात, बेहु
साधु तणो थयो विघात ॥ उपना सातमे सुर
आवास, सत्तर सागर लगें लील विलास ॥८॥
नेमीसरने तेणें प्रस्तावें, केवल महिमा करवा
आवे ॥ प्रश्नकरे कहो जग आधार, किहां थाशे
स्वामी अम अवतार ॥ ९ ॥ जगवंत कहे इण

नरत मझार, मिथिला पुरी अलका अवतार ॥ज
यसेन राजानो सुविवेक, पुत्र होशे बेहुमांहि ए
क ॥ १० ॥ बीजो नगर सुदर्शन जेह, मेणरह
या सुत होशे तेह ॥ इम सांनली गया देवता
दोय, निज देवलोकें हर्षित होय ॥ ११ ॥ अनु
क्रमें सुर सुख नोगवी सार, एक तणो मि
थिला अवतार ॥ जयसेन वनमाला कूखें हंस,
पुत्र पद्मरथ कुल अवतंस ॥ १२ ॥ जयसेन रा
जा दीक्षा लीध, ऋद्धि पद्मरथ पुत्रने दीध ॥
पुष्पमाला पटराणी सुरंग, नोगवे राजा सुख अ
नंग ॥ १३ ॥ एकदिन अपहरियो वक्रतुरंग, नृ
प अटवी पडियो जाणे कुरंग ॥ तिहां दीठो तु
ऊ अंगज जेह, पूरव नव तणो प्रगट्यो नेह ॥
॥ १४ ॥ बालक उंचो लीधो जाम, पूठे लशक
र आव्युं ताम ॥ गज चडी राजा मिथिला आ
व्यो, पुत्र जनम जेम रंग वधाव्यो ॥ १५ ॥
बीज तणो जेम वाधे चंद, मेणरहया तुज पुत्र
आणंद ॥ सतीय सुणी हरखी ततकाल, समय
सुंदर कहे दशमी ढाल ॥ १६ ॥

दुहा ॥ जेहवे मुनिवर इम कहे, तेहवे एक विमान ॥ नभथी नीचुं उतरयुं, तेजें भाण समान ॥ १ ॥ जयजय शब्द समुच्चरी, अपछर आणंद पूर ॥ घम घम घमके घूघरी, बाजे वाजिंत्र तूर॥२॥निर्मल फिटक रत्नमय, नाटक पेड बत्रीश ॥ मणि मुक्ताफल जालिका, शोभामान सुजगीश ॥ ३ ॥ तेणे विमानथी नीसरयो, देव दिव्य आकार ॥ कानें कुंडल झलहले, उरें मुक्ताफल हार ॥४॥ सती तणा ते देवता, पहिला प्रणमी पाय ॥ साधु भणी वांदे पछी, बेसे आगल आय ॥ ५ ॥

ढाल ११ मी ॥ रे जीव जिनधर्म कीजियें॥ ए देशी ॥ मणिप्रभ विपरीत वंदना, देखी कहे एम ॥ तुझ सरिखा पिण देवता, कहो भूले केम ॥ १ ॥ धर्म तणो उपकारडो, मोठो संसार ॥ परहित जाणी जिके करे, धन ते नर नार ॥ ध० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ राजनीति धर्म नीतिना, सुर कहीयें जाण ॥ ते पिण लोपे रीतिने, कोण चाले प्राण ॥ ध० ॥ ३ ॥ सुण परमारथ सुर कहे, विद्याधर राय ॥ नगर सुदर्शननो

धणी, मणिरथ कहेवाय ॥ ध० ॥ ४ ॥ जुगबा हु बंधव हतो, तेहने युवराज ॥ रमवा उद्यानें गयो, सघलो लेइ साज ॥ ध० ॥ ५ ॥ मणिरथ भाई मारीयो, वयराण संबंध ॥ खड्ग प्रहार दी धो खरो, छेद्यो तसु खंध ॥ ध० ॥ ६ ॥ कंठग त प्राण आव्यां थकां, निर्झराव्यो जेण ॥ का ज समार्‍यां तेहनां, मेणरहया एण ॥ धर्म० ॥ ॥ ७ ॥ धर्म मर्म समाझावीयो, मुकाव्यो क्रोध॥ अणसण पिण उच्चरावीयुं, दीधो प्रतिबोध ॥ ध०॥ ॥ ८ ॥ काल करी गयो पांचमे, देवलोकें ते ह ॥ इंद्र सामानिक सुर हुउ, देवता हुं एह ॥ ध० ॥ ९ ॥धर्माचारज माहरे, मेणरहया जाणी ॥ पेहली कीधी वंदना, उपगार प्रमाणी ॥ध० ॥ १० ॥ जेहथी जिन धर्म पामीयो, उपकारी सोय ॥ धर्माचारज आपणो, तेहने ते होय ॥ ध० ॥ ११ ॥ तीन थोक जिनशासने, कह्या दुःप्रतिकार ॥ मात पिता शेठ धर्मनो, कीधो जेणें उपकार ॥ ध० ॥ १२ ॥ विद्याधर मन चिं तवे, में जाण्यो मर्म ॥ त्यां दुःख पामे जीवडो, न करे जिहां धर्म ॥ ध० ॥ १३ ॥ देव कहे सां

भल सती, तुं सामिणी मुझ ॥ मेणरहया तुं मुज प्रिये, कहे ते करुं तुझ ॥ ध० ॥ १४ ॥ मुजने प्रिय सुख मोक्षनां, ते तें न देवाय ॥ पिण एकवार तुं पुत्रनी, पासें लेई जाय ॥ ध० ॥ १५ ॥ आंखें पुत्र देखी करी, मन आणीश ठाम ॥ काज समारीश आपणुं, ढील नही धर्म काम ॥ ध० ॥ १६ ॥ ढाल एह इग्यारमी, कह्यो परउपकार ॥ समयसुंदर कहे हिवे कहुं, आगलको अधिकार ॥ धर्म० ॥ १७ ॥

ढाल १२ मी ॥ मरुदेवा माताजी इम भणे ॥ ए देशी ॥ मनडुं रे उमाह्युं मिलवा पुत्रनेंरे, मेणरहया कहे एमरे ॥ सांभल सुर वचन नारीनुं रे, पुत्र उपर, बहु प्रेमरे ॥ मनडुरे० ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ में जनमीने वनमें मुकीयोरे, स्नान कराव्युं न साहिरे ॥ उरें धरीने नवि धवरावीयोरे, खांति रहे मनमाहिरे ॥ मनडुं० ॥ २ ॥ आंख न आंजी अणीआलडीरे, अर्द्धचंद नवि कीयो भालरे ॥ हेजशुं नवि हुलरावीयोरे, अंगज मुझ सुकुमालरे ॥ मन० ॥ ३ ॥ नजर भरी नवि जोईयोरे, मुझ दीउ दैव विगोहरे ॥ जलविण माछली

टलवलुंरे, मुझ घणो पुत्रनो मोहर ॥ मन० ॥
॥ ४ ॥ मेणरहया मिथिलापुरी रे, सुर पहोती
करि आणरे ॥ जिहां नमि मल्लि जिनवर
तणां रे, जनम व्रत केवलनाणरे ॥ मन० ॥ ५॥
प्रथम जुहारयां देहरांरे, पछी गइ साधवी पास
रे ॥ पाय कमल प्रणमी करी रे, आगल बेठी
उल्लासरे ॥ मन० ॥ ६ ॥ साधवी धर्म संभला
वीयो रे, आवियो परम संवेगरे ॥ सुर कहे चा
ल नृपमंदिरेंरे, पुत्र देखाडुं तुज वेगरे ॥ मन० ॥
॥ ७ ॥ मेणरहया कहे माहरेरे, पुत्रशुं नहीं प्र
तिबंधरे ॥ धिक् धिक् मोहनी कर्मनेरे, हुं थइ
मूढमति अंधरे ॥ मन० ॥ ८ ॥ पुत्रनी मोहनी
मेंं तजीरे, अथिर कुटुंब परिवाररे ॥ जिनधर्म
एक सखाविउरे, अवर संसार असाररे ॥ म०
॥ ९ ॥ तो ह्विवे सुख जिम तिम करी रे, हुं व्र
त लेशुं हितकामरे ॥ मेणरहया ने प्रणमी करी
रे, सुर गयो आपण ठामरे ॥ मन० ॥ १० ॥
साधवी पासें संजम लियोरे, मेणरहया अभिरा
मरे ॥ तप जप काठिन करी आकरां रे, साधवी
सुव्रता नामरे ॥ मन० ॥ ११ ॥ बारमी ढाल पूरी

थईरे, मोहनी कर्म अधिकाररे ॥ समयसुंदर कहे हिवे सुणो रे, पुत्रनो कोण प्रकाररे॥म०॥१२॥

दुहा ॥ तिण बालक वधतां तिहां, शत्रु नमा ड्या जेण ॥ नाम यथारथ आपियुं, कुमरतणुं नमि तेण ॥ १ ॥ आठ वरसनो तिणें कीयो, सकल कला अन्यास ॥ अनुक्रमें यौवन आवि युं, मृगनयणी हगपास॥२॥वंश इखवांगनी उपनी रूपवंत गुणवंत॥सहस अठोत्तर कन्यका, परणावी अति कंत॥३॥निज नारीशुं परिवरयो, अपछर शुं जेम इंद ॥ काम नोग सुख नोगवे, पामे पर माणंद ॥ ४ ॥ हिवे ते राजा पद्मरथ, नमिने दे ई राज ॥ दीक्षा लेई मुगतें गयो, सारयां आ तम काज ॥ ५ ॥ ते पिण मणिरथ पापीयो, नि जबंधवने मार॥ तेणें निशि अहिडंशीयो मूउ, नरक गयो निर्धार ॥ ६ ॥ चंद्रजस राजा था पियो, मिलि मेहेतें परधान ॥ पाले राज पंडूर शुं, दिन दिन अधिके वान ॥ ७ ॥

ढाल १३ मी ॥ योगणनी देशी ॥ एकदिन नमि राजानो हाथी, बूटो अतिमद मस्त थकों॥ हांरेमद मस्तथकों॥आलान थंन उखेडी नाख्यो,

मारे माणस देई धको॥हां रे दे० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जाय लोक दिशो दिशि नागां, बीहितां पेट पडे ध्रसको ॥ हां० ॥ सांकल तोडे रुंखनें मोडे, को तेहने जाली न सको ॥ हां० ॥ २ ॥ विंध्याचल अटवी नणी जातो, नगर सुदर्शन सीम रह्यो ॥ हां० ॥ चंद्रजसा नृप सेवकें दी ठो, आपणा नृपने आय कह्यो ॥ हां० ॥ ३ ॥ चंद्रजसा नृप झाली आण्यो, बांध्यो गज दरबार रह्यो ॥ हां० ॥ फिरतां दूत देखी मन हरखी, नमि राजा नणी जाय कह्यो ॥ हां० ॥ ४ ॥ नमि राजा निजदूत मूकीने, चंद्रजसा पासें गज मांगे ॥ हां० ॥ चंद्रजसा पिण सबलो राजा, कह्यो ते तेहने नवि लागे ॥ हां० ॥ ५ ॥ वली कहे रतन लिख्या नही नाम, जे सबलो ते नृप जोगवे ॥ हां० ॥ शूरने वीर तिके जग साचा, छल बल करी अरियण जोगवे ॥ हां० ॥ ६ ॥ दूतवचन सुणी नमि नृप कोप्यो, सिंह हकारयो केम खमे ॥ हां० ॥ अष्टापद गर्जारव सांसे, केम करि वर्षा काल समे ॥ हां० ॥ ७ ॥ तुरत प्रयाण नंना वजडावी, मेघाडंबर छत्र धरी ॥

॥ हां० ॥ हय गय रथ पायक दल मेलि, राजा चाल्यो कटक करी ॥ हां० ॥ ८ ॥ चंद्रजसा पिण नमि आगम सुणी, सैन्य लेई साहमो चाल्यो ॥ हां० ॥ नगरथकी बाहिर नीसरतो, प्रथमथी अपशकुने पाल्यो ॥ हां० ॥ ९ ॥ मंत्रि प्रधान वचन सुणी राजा, पोल जडी पुर मांहे रह्यो ॥ हां० ॥ नगर वींटी पड्यो चिहुं दिशि परदल, नाली गोला वहे गढ विग्रह्यो ॥ हां० ॥ १० ॥ सुव्रता साधवी सुणी मनचिंतवे, हा मत मनुष्यनो क्षय होई ॥ हां० ॥ बांधव बेहु मांहो मांहे झूझी, जाये मत दुर्गति कोई ॥ हां० ॥ ११ ॥ गुरुणीने पूछी करी सुव्रता, प्रथम गई नमिनी पासें ॥ हां० ॥ पदपंकज प्रणमी करी पूछ्युं, केम आव्यां कहो नृपवासें ॥ हां० ॥ १२ ॥ सुण राजान विषय विष सरीखा, कारिमी ऋद्धिने राज तेह ॥ हां० ॥ तेहने काजें संग्राम तें मांड्यो, आपणा बंधव साथें एह ॥ हां० ॥ १३ ॥ कहे बांधव केम ते मुज होई, साधवी भेद कह्यो सघलो ॥ हां० ॥ अति अभिमानी ते नमि राजा, मिलण न जाये ते

सबलो ॥ हां० ॥ १४ ॥ बारि दिशि पयठी पुर मांहे, राजमंदिर आंगण आई ॥ हां० ॥ दीठी चंद्रजसा आवंती, चरण कमल प्रणम्या धाई ॥ हां० ॥ १५ ॥ सजन संबंधि सघलां आयां, नयणें नीरप्रवाह झरे ॥ हां० ॥ कहो साधवी तुम्हें संजम मारग, दुःकर लीधो केणी परें ॥ हां० ॥ १६ ॥ चंद्रजसा कहे किहां मुझ बांधव, साधवी वात कही सघली ॥ हां० ॥ जिणसें ती तूं जुद्ध करे ते, बांधवडे तुज रंगरली ॥ हां रे तु० ॥ १७ ॥ चंद्रजसा मिलवा नणी चाल्यो, नमि सामो आइ पाय लागो ॥ हां० ॥ बांधव बेउ मिल्या मनरंगें, लोक तणा मन डर नागो ॥ हां० ॥ १८ ॥ नमि राजाने देश अवंती, राज देई वैराग नजी ॥ हां० ॥ चंद्रजसा गुरुपासें दीक्षा, ग्रही कारिमी ऋद्धि तजी ॥ ॥ हां० ॥ १९ ॥ नमि राजा नोगवे मिथिलापुरी, नगर सुदर्शन राज बेई ॥ हां० ॥ समयसुंदर कहे सुणो हो चतुर नर, तेरमी ढाल ए चित्त देई ॥ हां रे चित्त० ॥ २० ॥

ढाल १४ मी ॥ नावनानी देशी ॥ हो राज

बे रूमी परें ॥ रूडी परें ॥ रेहो सुख भोगवतां सुविशेष ॥ हो देह दाघज्वर उपनो ॥ उ० ॥ रेहो न मिटे पीड निमेष ॥ १ ॥ हो कर्मथी न छूटेरे, कोई विण भोगव्या ॥ रेहो कडूवां कर्मविपाक ॥ ए आंकणी हो दाह छमासी तनु दहे ॥ त० ॥ रेहो जाणे अगनिनी झाल ॥ हो सहि न शके नेमि वेदना ॥ वे० ॥ रेहो भोजन तज्युं ततकाल ॥ त० ॥ रेहो कडू० ॥ २ ॥ हो वडवडा वैद्य बोलाविया ॥ बो० ॥ रेहो पूछ्या बेहुकर जोमी ॥ हो लालच लोभ देखाडीयो ॥ दे० ॥ रेहो देशुं कनकनी कोमी ॥ क० ॥ रेहो कडू० ॥ ३ ॥ औषध भेष ज तुम्हें करो ॥ तु० ॥ रेहो करो कोइ दाय उपाय ॥ हो वैद्यकला कोई केलवो ॥ को० ॥ रेहो जेणें करी दाघज्वर जाय ॥ जे० ॥ रे० ॥ ४ ॥ हो वैद्य कहे राजन सुणो ॥ रा० ॥ रेहो अम्हें न साधुं नर आय ॥ हो पिण एक तपाति उपाय छे ॥ उ० ॥ रेहो बावना चंदन लाय ॥ बा० ॥ रे० ॥ ५ ॥ हो सपत्नने आठ अंतेउरी ॥ अं० रे हो दीठो दाघज्वर ताप ॥ हो को केहनी न लीये वेदना ॥ वे० ॥ रेहो वनिता करे विला

प ॥ वि० ॥ रे० ॥ ६ ॥ हो आखे बिहुं आंसू झरे ॥ आं० ॥ रेहो ऊभी प्रीतम पास॥ हो स्ना न मंजन भोजन तज्या ॥ भो० ॥ रेहो अब ला थइरे उदास ॥ थ० ॥ रे० ॥ ७॥ हो घसी घसी चंदन बावना ॥ बा० ॥ रेहो भरीभरी क नक कचोल ॥ क० ॥ हो नारि विलेपन तनु घसे ॥ त० ॥ रेहो क्षण क्षण करे वली खोल ॥ खो० ॥ रे० ॥ ८ ॥ हो खलके चूडी सोना तणी ॥ सो० ॥ रेहो शब्द सोहावे नही कान॥ हो चूडी उतारी आपणी ॥ आ० ॥ रेहो प्रेम दा प्रेम प्रधान ॥ प्रे० ॥ रे० ॥ ९ ॥ हो सघ लां वलय उतारतां ॥ उ० ॥ रेहो एकेक राख्यो मंगलिक ॥ हो वालि सोनुं जे आपणुं ॥आ० ॥ रेहो जे तोभे कान अलीक ॥ जे० ॥ रे० ॥ ॥ १० ॥ हो वलय कोलाहल केम रह्यो ॥ के० ॥ रेहो राजा पूछी निजनारि ॥ हो भेद सु एयो मिथिला धणी ॥ मि० ॥ रेहो चिंते चित्त मझार ॥ चिं० ॥ रे० ॥ ११ ॥ हो एकाकी प णुं अति भलुं ॥ अ० ॥ रेहो बहु जण मिल्या बहु दुःख ॥ हो चक्रवर्तिने सुख नही ॥ सु० ॥

रेहो जे मुनिवर ने सुख ॥ जे० ॥ रे० ॥ १२ ॥
हो एकलो आवे जीवडो॥जी०॥रेहो परभव जाय
पिण एक ॥हो कुटुंब सहु को कारिमुं ॥ का०॥
रे हो धारु धर्म विवेक ॥धा०॥ रे० ॥ १३ ॥
हो भवभव जाय जीव एकलो ॥ ए० ॥ रेहो
साथें कर्म सखाय ॥ हो पुण्यें शुभ गति पामि
यें ॥ पा० ॥ रेहो पापें दुर्गति जाय ॥ पा० ॥
रे०॥ १४॥हो जीव अछे एक शाश्वतो ॥ शा०॥
रेहो दर्शन ज्ञान संपन्न ॥ हो कह्या संयोग अ
शाश्वता ॥ अ० ॥ रेहो पुत्र कलत्र धन धान्य
॥ पु० ॥ रे० ॥१५॥हो स्वारथनुं सहू को मिल्युं
॥ स० ॥ रेहो नही को राखणहार ॥ हो पीड न
ले कोइ पारकी ॥पा० ॥ रेहो ए संसार असार
॥ ए० ॥ रे० ॥ १६ ॥ हो वलि मनमांहे चिं
तवे ॥ चिं० ॥ रेहो जो मुझ वेदन जाय ॥ हो
तो हूं राज्य तजी करी ॥ त० ॥ रेहो चारित्र
लेउं चित्त लाय ॥ चा० ॥ रे० ॥ १७ ॥ रेहो
एह मनोरथ मन धरी ॥ म० ॥ रेहो निशि भ
र सूतो नमि राय ॥ रेहो सुपन दीठुं रात पाछ
ली ॥ पा० ॥ रेहो आणंद अंग न माय ॥ अं०

॥ २० ॥ १८ ॥ हो मेरु उपर सुरराज चड्यो ॥सु० ॥ रेहो दीठो आतम रूप ॥ हो ऊबकी जा ग्यो गई वेदना ॥ वे० ॥ रेहो हर्षित हुवो नमि नृप ॥ ह० ॥ रे० ॥ १९ ॥ हो औषध कोई ला ग्युं नही ॥ ला० ॥ रेहो लाग्यो धर्म उपाय ॥ हो ढाल नणी ए चउदमी ॥ च० ॥ रेहो समय सुंदर गुण गाय ॥ स० ॥ रेहो कडू० ॥ २० ॥

दुहा ॥ नमि राजा इम चिंतवी, अहो सुप नंतर सार ॥ पहेलो किहांइ दीठो हतो, में कि णही अवतार ॥ १ ॥ जातिसमरण उपन्युं, दी ठो सुर नवनेत ॥ मेरु शिखर आव्यो हतो, हुं जिन महिमा हेत ॥ २ ॥ प्रतिबूझयो राजा नमि, तीजो प्रत्येक बुद्ध ॥ नावें चारित्र लीयो नलो, संवेगी मनशुद्ध ॥ ३ ॥ पाट थापी निज पुत्रने, राज रमणि सवि छंड ॥ माया ममता परिहरी, नमि पहोतो वनखंड ॥ ४ ॥ इंद्र परीक्षा आ वीयो, करी ब्राह्मणनुं रूप ॥ नमिराजा वैराग नुं, देखुं कोण स्वरूप ॥ ५ ॥

ढाल १५ मी ॥ बे बांधव वंदन चल्या ॥ ए देशी ॥ इंद्र कहे नमि रायनें, हेतु कारण पभि

चोयरे ॥ एह अर्थ श्रवणें सुणी, प्रश्नपडुत्तर जोयरे ॥इंद्र कहे नमि०॥१॥ मिथिला नगरी मंदिरें, सबल कोलाहल आजोरे ॥ दारुण दीन दयामणो, केम सुणीयें ऋषिराजो रे ॥ इं०॥२॥ नमि राजा कहे इंद्रने, हेतु कारण पडिचोयरे ॥ एह अर्थ श्रवणें सुणी, प्रश्नपडुत्तर जोयरे ॥ नमि० ॥ ३ ॥ मिथिला नगरी वने हतो, वृक्ष मनोरम नामोरे ॥ फल फूलें गया शोभतो, बहु पंखी विश्रामो रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ते तरु वाय कंपावीयो, तेणे पंखीनां वृंदोरे ॥ हीन दीन दुःखीयां थकां, अशरण करे आक्रंदोरे ॥ न० ॥ ५ ॥ अग्निए मिथिला बले, मंदिरनो नहीं लेखोरे ॥ एह अंतेउर आरडे, एक वार फिरि देखोरे ॥ इंद्र० ॥ ६ ॥ सुखें समाधें जीवुं वसुं, काम नही किणताइरे ॥ मिथिला नगरी दाझतां, अम न बले इहां कांइ रे ॥ न० ॥ ७ ॥ गढ गोपुर करि अर्गला, अट्टालक खणे खाइरे ॥ यंत्रशतघ्नी सज करी, क्षत्रिय तुं पछी जाइरे ॥ इंद्र० ॥ ८ ॥ श्रद्धा नगरी में सजी, उपशम रस प्रकारोरे ॥ संवेग रूप गोपुर सज्यो, तप

भोगल अति सारोरे ॥ न० ॥ ९ ॥ सबल कि
घाड संवर तणां, खाइ यंत्र आट्टालोरे ॥ ए त्र
णे सबला सज्या, त्रणे गुप्ति विशालोरे ॥ न०॥
॥ १० ॥ वीरज धनुष चढावीयुं, समिति प्रत्यं
चा चाढीरे ॥ धैर्यमुठि काठी ग्रही, सत्यशुं वी
टी गाढीरे ॥ न० ॥११॥ बार भेद तप बाणशुं कर्म
कंचुकनें भेदीरे ॥ मुज आतम रूप शत्रुने, जी
पे जिनमत वेदीरे ॥ न० ॥ १२ ॥ ऊंचां मंदि
र मालीयां, वरंडी वर प्रसादोरे ॥ नवा करावी
आपणां, पणी तजे परमादोरे ॥ न० ॥ १३ ॥
मारग विचें घर ते करे, जे मन धरे संदेहोरे ॥
निश्चें मुक्ति भणी चल्यो, तस घर शाश्वतो ते
होरे ॥ नमि० ॥ १४ ॥ लोभहार तस्कर बुरो,
गंठी छोड निवारीरे ॥ निरुपद्रव नगरी करी,
होजे पणी व्रतधारीरे ॥ इंद्र० ॥ १५ ॥ एह अ
न्याय इहां घणो, मिथ्यामति दंड दीजेंरे ॥ वि
ण अपराधी बांधीयें, अपराधी मूकीजेंरे ॥ न
मि०॥ १६ ॥ वली सीमाल भूपाल जे, माने न
ही तुज शिक्कारे ॥ ते वश आणी आपणे, तुं
पणी लेजे दिक्कारे ॥ इंद्र० ॥ १७ ॥ जे रण फूं

रुं एकलो, दश लाख वैरी जीपेरे ॥ एक जीपे कोइ आतमा, तो ते अधिको दीपेरे ॥ न० ॥ ॥ १८ ॥ याग करावी अति घणा, माणस घणां जिमाडीरे ॥ दीये कनकादि दक्षणा, व्रतले जे ऋद्धि छांडीरे ॥ इंद्र० ॥ १९ ॥ जो कोइ दश लाख दे, मास मास गोदानरे ॥ संजम अधिको तेहथी, दान विनापि प्रधानरे ॥ न० ॥ ॥ २० ॥ कठिन गृहाश्रम पालतां, समरथ नही तिण नासेरे ॥ पिण पोषध व्रत पालतां, रहे तुं गृहस्थावासेरे ॥ इंद्र० ॥ २१ ॥ डाभ अणी भोजन करे, मास मास जे बालोरे ॥ साधु तणी कला शोलमी, अर्धे नही तिण कालोरे ॥ नमि० ॥ २२ ॥ कनक रजत मणि मोतीयें, भरी पूरा भंडाररे ॥ संजम पिण लेजे पछी, क्षत्रिय वर निरधाररे ॥ इंद्र० ॥ २३ ॥ पर्वत कनक रूपा तणा, मोहोटा मेरु प्रमाणरे ॥ वार अनंती पामीया, न थइ तृप्ति न त्राणरे ॥ नमि० ॥ २४ ॥ काम भोग लाधा थकां, ए अचरिज जे छोडेरे ॥ पश्चात्ताप होशे पछी, अण हुंताने दोडरे ॥ इं० ॥ २५ ॥ काम आशीवि

ष सारिखा, साल समा दुःखखाणीरे ॥ वंछित काम अणकामता, दुर्गतियें जाय प्राणीरे ॥न मि० ॥ २६ ॥ क्रोधें अधोगति पामियें, मानें अधमगति होयरे ॥ माया शुजगति प्रत्यें हणें, लोजथकी जय दोयरे ॥ न० ॥ २७ ॥ उत्तरा ध्ययनथी उद्धरया, प्रश्न उत्तर अजिरामोरे ॥ पनरमी ढाल पूरी थई, समयसुंदर हित का मो रे ॥ नमि० ॥ २८ ॥

ढाल १६ मी ॥ रयण केतां रे माइ ऊलम लां ॥ ए देशी ॥ ब्राह्मणनुं रूप फेरीयुं, आप प्र ग्रट थयो इंद्र ॥ चपल कुंडल आजरणथको, प्रणमी पाय अरविंद ॥ १ ॥ इंद्र प्रशंसा इम करे ॥ धन्य धन्य तुं ऋषि राय ॥ त्रण्य प्रद क्षिणा देई करी, प्रणमी वारवार पाय ॥ इं० ॥ ॥ २ ॥ अहो तें क्रोध दूरे कीयो, अहो तें जी त्यो अजिमान ॥ अहो तें माया ममता तजी, अहो लोज तज्यो असमान ॥ इं० ॥ ३ ॥ अहो तें आर्जव अति जलो, अहो तें मार्दव सार ॥ अहो तें साधु क्षमा जली, अहो तें मुनि उदा र इं० ॥ ४ ॥ इण जव उत्तम पूज्य तुं, परजव

होइश सिद्ध ॥ पामीश साधु तुं मुक्तिनां, सास तां सुख समृद्ध ॥ इं० ॥ ५ ॥ धन्य करणी तोरी साधुजी, धन्य पिता कुल धन्य ॥ धन्य माता जेणें जनमियो, एह्वो पुत्र रतन॥इं० ॥६॥ हुं बलिहारी ऋषि ताहरी, तुझ सम अवर न कोय ॥ चडते परिणामें चड्यो, सोने श्याम न होय ॥ इं० ॥ ७ ॥ तुं धन तुं कृतारथ थयो, सफल कीयो अवतार ॥ राज्य रमणी सवि परिहरी, लीधो संजम भार ॥ इं० ॥ ८ ॥ इम प्रशंसा करतो थको, देय प्रदक्षिणा तीन ॥ वली वली करे पग वंदना, भावभक्ति अति लीन ॥ इं० ॥ ९ ॥ शुभ लक्षण पद साधुनां, प्रणमी परम उल्लास ॥ चपल कुंडल शिर सेहरो, इंद्र गयो आकाश ॥ इं० ॥ १० ॥ शोलमी ढाल सोहामणी, इंद्र परीक्षा जाण ॥ समयसुंदर कहे सांभल्यां, जीवित जनम प्रमाण॥इं०॥११॥

ढाल १७ मी ॥ धन्याश्री रागमां ॥ बांसिवाजे हो वीणा ॥ ए देशी ॥ मुनिवर पाय नमुं पाय नमुं, नमिराजा ऋषि राय ॥ मुनि० ॥ ए आंकणी ॥ नमि राजा संजम लीउ ॥ सं०॥

जढते मन परिणाम ॥ मु० ॥ चोथे खंड चिहुं साधना ॥ चि० ॥ गुण गाइश अभिराम ॥ मुनि० ॥ १ ॥ इंद्र प्रशंसा इम सुणी ॥ इम० ॥ कीधो नहीं अहंकार ॥ मु० ॥ त्रीजो प्रत्येक बुद्ध ए ॥ बु० ॥ क्रमें क्रमें करे विहार ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ विमलनाथ प्रसादथी ॥ प्र० ॥ श्रीउग्रसेन पुरमाहे ॥ मु० ॥ गिरुउ गछ खरतर तणो ॥ खर० ॥ दिन दिन अधिक उछाह ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ युगप्रधान गुरु राजिया ॥ गु० ॥ श्री जिनसिंह मुणिंद ॥ मु० ॥ सकलचंद सुपसाउलें ॥ सु० ॥ मुऊ मन परमाणंद ॥ मु० ॥ ॥ ४ ॥ त्रीजो खंड पूरो थयो ॥ पू० ॥ नमिराजा अधिकार ॥ मु० ॥ सत्तरे ढाल सोहामणी ॥ सो० ॥॥ समयसुंदर सुखकार ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति श्री नमिराजा प्रत्येक बुधरासनामा तृतीय खंड संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ निग्गइ राजाको चतुर्थ रास लिख्यते ॥

दुहा ॥ सीमंधर स्वामी प्रमुख, विहरमान जिनवीश ॥ ज्ञानदिवाकर दीपता, चरण नमुं निश दीस ॥ १ ॥ वली प्रणमुं असिआउसा, मू

ल मंत्र नवकार ॥ धरणी धर पद्मावती, सुरपद
पाम्यो सार ॥ २ ॥ शत्रुंजो गिरिनार गिरि, श्री
य समेत गिरिंद ॥ आबू अष्टापद नमुं, ए ती
रथ आणंद ॥ ३ ॥ दान शीयल तप ए त्रणे,
भाव मिले तो चंग ॥ तेणे कारण कहुं निरगई,
चोथो खंड सुरंग ॥ ४ ॥

ढाल १ ली ॥ शीख न शीख न चेलणा ॥
ए देशी ॥ जंबु द्वीप सोहामणो, लाख जोयण
मान ॥ दक्षिण भरत तिहां भलो, देश गंधार
प्रधान ॥ १ ॥ राज करे सिंहरथ तिहां, राजा
परचंड ॥ वयरी राय नमावीया, परताप अखं
ड ॥ राज करे० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ पुंड्र व
र्द्धनपुर अतिभलुं, बहु ऋद्धिसम्रद्धि ॥ भूरमणी
भालें तिलो, सकले परसिद्ध ॥ राज क० ॥ ३ ॥
एकदिन राजा भेटणे, आया अश्व दोय ॥ उ
त्तर पंथना ऊपना, देखे सहु कोय ॥ राज० ॥
॥ ४ ॥ राजा राजकुमर थया, वेहु असवार ॥
नगरथकी बाहिर गया, चउगान मझार ॥ राज
करे० ॥ ५ ॥ राजायें अश्व दोडावीयो, केहवो
जोउं वेग ॥ पवनवेग जेम ऊडीयो, लागो उद्वे

ग ॥ राज० ॥ ६ ॥ जेम जेम वाग काठा ग्र
ही, तेम तेम चड्यो रोष ॥ अटवी मांहे लेई
गयो, अडतालीश कोश ॥ राज० ॥ ७ ॥ ढी
लो वाग मूको तिहां, थाक्यो नूपाल ॥ वक्रशि
क्षित ऊनो रह्यो, घोडो ततकाल ॥ राज० ॥
॥ ८ ॥ वक्रमाणस पिण एहवां, समजायां न जा
य ॥ लाल पाल माने नही, आपें पाधरां थाय
॥ राज करे० ॥ ९ ॥ अश्व लेइ तरु बांधीयो,
एकाकी राय ॥ प्राणवृत्ति करे आपणी, फल
ने फूल खाय ॥ राज० ॥ १० ॥ ऊंचो गिरि
उपर चड्यो, वसवा निवास ॥ नूप सात एक
नूमियो, देखे आवास ॥ राज० ॥ ११ ॥ तिहां
बेठी एक कन्यका, देखी दिव्यरूप ॥ ऐ ऐ अ
दनूत लावणिया, चमक्यो चित्त नूप ॥ राज०
॥ १२ ॥ कन्या ऊनी ऊठी थइ, दीधुं आदर
मान ॥ सिंहासन बेसण ठव्यो, मान विण तजे
ठान ॥ राज० ॥ १३ ॥ दुहा ॥ बार बोलावण
बेसणुं, बीडी बे कर जोड ॥ जे घर पांच बब्बा
नही, ते घर दूरें छोड ॥ राज० ॥ १४ ॥ नय
णे नयण बेहु मिल्यां, उपन्यो कामराग ॥ चतु

रां चमके लोह ज्युं, जोवे चित्त लाग ॥ राज० ॥ १५ ॥ दुहा ॥ नयण पदारथ नयण रस, नयणें नयण मिलंत ॥ अणजाणयाशुं प्रीतडी, पेहलां नयण करंत ॥ राज० ॥ १६ ॥ राजा तन मन उल्लस्या, कुमरीतन देखी ॥ प्रेम जणावे पाठलो, संभ्रम सुविशेषी ॥ राज० ॥ १७॥ ॥ दुहा ॥ जेणे दीठे क्रोध उपशमे, वाधे अधिक सनेह ॥ पूरवभव संबंधनो, तिणसेंति कोइ नेह ॥ १८ ॥ जेणे दीठे प्रेम उपशमे, जागे क्रोध कषाय ॥ वैरभाव कोइ पाठलो, तिणसेंती कहेवाय ॥ १९ ॥ ढाल ॥ राजा कहे सुण कन्यका, एकाकी केम ॥ अटवी मांहे रही इहां, नव यौवन प्रेम ॥ २० ॥ कहे कन्या नृपति भणी, विनति अवधार ॥ पहेलो परण तुं मुजनें, पठी कहीश विचार ॥ राज० ॥ २१ ॥ लक्षी अने भोजन भलां, साहेब बगसीस ॥ नवि ठेली जे आवतां, ए विश्वावीश ॥ राज० ॥ २२ ॥ इम राजा मनें चिंतवी, देहरा मांहे जाय॥ जिनप्रतिमा पूजा करी, प्रणमे प्रभुपाय ॥ राज करे० ॥ २३ ॥ ते कन्या परणी तिहां, गंधर्व वि

थाइ ॥ रातें सूतां रतिरंगशुं, बेहु घरमांह ॥ राज० ॥ २४ ॥ उठी प्रभातें बे जणां, वली देव जूहार ॥ बेठो राय सिंहासने, अर्धा निज नार ॥ राज करे० ॥ २५ ॥ पेहली ढाल पूरी थई, परणी अज्ञात ॥ समय सुंदर कहे हिवे सुणो, कुमरीनी वात ॥ राज करे० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ नारी कहे प्रीतम सुणो, मुज संबंध समूल ॥ भरत क्षेत्रमांहि नगर, क्षत्री प्रतिष्ठ अनुकूल ॥ १ ॥ एकदिन राजाने हुउ, सभा चितरवा राग ॥ सकल चितारा तेडीया, वेहूंची दीये दश भाग ॥ २ ॥ चित्रांगद एक चित्रकार, निर्धन वृद्ध शरीर ॥ चित्र सभा नित्य चितरे, पिण मनमां दिलगीर ॥ ३ ॥

ढाल २ जी ॥ उपशम तरुछाया रस लीजें ॥ ए देशी ॥ काल गयो केतो चितरतां, पूरुं काम न थायजी ॥ चित्रांगद चितारा केरी, पुत्री एक कहायजी ॥ १ ॥ कनममंजरी चतुर विचक्षण, सकल कलागुण जाणजी ॥ वेधक वचन अधिक चतुराइ, अद्भुत रूप जुवानजी ॥ कनक० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ एक दिवसें चि

तारा पुत्री, लेई भक्त आहारजी ॥ राजमारग आवंती रोकी, खेलंते असवारजी ॥ कनक० ॥ ॥ ३ ॥ ते असवार गयो जब दूरें, तब ते आवी तेतजी ॥ पिता गयो भोजन मूकीने, देहनी चिंता हेतजी ॥ कन० ॥ ४ ॥ नवरी बेठी तेणें चितारी, मणि कुट्टिम सुपवित्रजी ॥ वानाशुं वारू चीतारियो, मोर पिछ सुवि चित्रजी ॥ क०॥ ॥ ५ ॥ तेणें अवसरें राजा तिहां आव्यो, जाण्यो साचो मोरजी ॥ झालण काजें जबकी कर वाह्यो, भांगा नख अतिजोरजी ॥ कनक० ॥ ॥ ६ ॥ बाली देइ हसी चीतारी, वाह्यो मर्मनो बोलजी ॥ त्रिहुं पाइयें डगलो थो मांचो, चोथो मिल्यो अमोलजी ॥ कन० ॥ ७ ॥ वचन सुणी विलखो थयो राजा, पूछे कहे कोण मंचजी ॥ कनकमंजरी कुमरी हसती, सघलो कहे प्रपंचजी ॥ कन० ॥८॥ बाप भणी भोजन आणंती, दीठो पुरुष में एकजी ॥ राजमारग घोडो दोडंतो, ते मांहे नही विवेकजी ॥ कनक० ॥ ९ ॥ दयाभाव नही ते मांहे, मूढ न जाणे एमजी ॥ वहू बेटी बूढीनें बाली, चाले मारग केमजी ॥

कन० ॥ १० ॥ एक मूरख ए पेहेलो पायो, बी
जो पायो एहजी ॥ जेणें मुझ बाप भणी चित्र
शाला, सरखी विहेंची तेहजी ॥ कन० ॥ ११॥
बहु परिवारें बीजा चितारा, मुझ पिता असहा
यजी ॥ अति निर्धन बूढो केम तेहने, सरिखुं
काम देवायजी ॥ कन० ॥ १२ ॥ मुझ पिता त्री
जो ए मूरख, भोजन वेला विवादजी ॥ देहचिं
ता ऊठीनें जाये, शीतल किस्यो सवादजी॥क०
॥ १३ ॥ शीतल अन्न जन्म पुत्रीनुं, कर्षण ह
णयो कुवायजी ॥ वयर विरोध सगाशुं चारे,
स्वाद हीन कहेवायजी ॥ कनक० ॥ १४ ॥ चो
थो मूरख तूं राजेसर, जेणें आणयो मन भर्म
जी ॥ मोर किहां आवे इणें ठानें, जाणयो नही
ए मर्मजी ॥ कनक० ॥ १५ ॥ ऐ ऐ राजन तु
झ चतुराई, ऐ ऐ बुद्धि अपारजी ॥ घणा दिव
सथी जोतां मिलीया, मूरख पाया चारजी ॥ क
नक० ॥ १६ ॥ वचन चातुरी रंजियो राजा, रं
जियो देखी रूपजी ॥ गति मति धृति आकृ
ति अति रंज्यो, कुमरी एह अनूपजी ॥ कन०
॥ १७ ॥ चीतारी नृपनुं चित्त चोरी, पोहोती

निज आवासजी ॥ रायतणे चित्त चटपट ला
गी, प्रेमबंधन मृगपासजी ॥ कनक० ॥ १८ ॥
चित्रांगद चीतारा पासें, मंत्री मूक्या रायजी ॥
कनकमंजरी कन्या मांगी, तुं मुजने परणाय
जी ॥ कनक० ॥ १९ ॥ हुं निर्धन तूं छत्रपति
राजा, केम थाये विवाहजी ॥ राजा आप दियां
धन बहुलां, चित्रकर थयो उत्साहजी ॥ कन०॥
॥ २० ॥ शुभ मुहूर्तें ते परण्यो राजा, कनकमं
जरी नारजी ॥ मोटो मेहेल दीयो रहेवाने, ब
हु दासी परिवारजी ॥ कनक० ॥ २१ ॥ राजा
ने बहु अपछरा सरखी, राणीरूप निधानजी ॥
आप आपणे वारे आवे, नृपमंदिर बहु मान
जी ॥ कनक० ॥ २२ ॥ तिणे रातें वारो निवा
र्यो, नवपरणी तने दीधजी ॥ करी शिणगार
गई पियु पासें, दासी साथें लीधजी ॥ कनक०
॥ २३ ॥ राजानें राणी बेहु मिलीयां, हुउ हरख
अपारजी ॥ समय सुंदर कहे ढाल भणी ए,
बीजी बहु विस्तारजी ॥ कनक० ॥ २४ ॥

दुहा ॥ पूर्व संकेतें मदनिका, प्रश्न करे बहुमा
न ॥ स्वामीनी अचरिज सारिखुं, कहो कोइ मु

ज आख्यान ॥ १ ॥ कहे राणी सुण मदनिका, उतावली मत थाय ॥ एकवार राजा सुवे, कहिश पछी सुविचार ॥ २ ॥ राजानें अचरिज थयुं, किसी कहे एह वात ॥ सूतो कपट निद्रा करी, सुणवा माझिम रात ॥ ३ ॥

ढाल ३ जी ॥ राग जयतश्री ॥ गिरिधर आवेगो ॥ ए देशी ॥ मदनिका बोले हे सखी अब कहे कथा तूं काइ ॥ राजा पिण सुणतो न ही, रात खुशी मांहे जाय ॥ १ ॥ मोरी बेहनी, कहे कांइ अचरिज वात ॥ मुजमन अधिक सुहात ॥ मोरी० ॥ रंगभर माझिम रात ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ राजा तणी राणी सुण, एक नगर वसंत ॥ तिहां नगर शेठ वसे भलो, धर्मी ने धनवंत ॥ मो० ॥ २ ॥ तेणें शेठें मंडाव्युं देहरुं, एक हाथ उंचुं तेह ॥ मांहे मांड्यों देवता, चउहत्तो तसु देह ॥ मो० ॥ ३ ॥ मदनिका पूछे स्वामीनी, ए वात केम मनाय ॥ केम एक हाथनी देहरी, चउहत्तो देव समाय ॥ मो० ॥ ४ ॥ राणी कहे सुण हे सखी, अब उंघ आवे मुझ ॥ वेधक छे तो आवजो, काले क

देशुं तुज ॥ मो० ॥ ५ ॥ मदनिका निज मंदिर गइ. नृप थयो चटपट चित्त ॥ बीजे दिन वारो दीयो, चितारीशुं बहु प्रीत ॥ मो० ॥ ६ ॥ तेणे संचि पूछी ते कहे, सुण सखी मूढ गिमार ॥ ए वातनुं अचरिज किश्युं, चतुर्भुज देव मुरार ॥ मो० ॥ ७ ॥ एक वली कथा कहे सामिनी, हुं करुं एक अरदास ॥ राणी कहे राजा सुणे, कपट निद्राकेरे आस ॥ मो० ॥ ८ ॥ किण रायें चोर ग्रही करी, घालीया पेटीमांहे ॥ मंजुष मूकी करी, वाही नदी प्रवाहे ॥ मो० ॥ ९ ॥ ते नदीमां बहेती गई, किण नगर पासें मंजूष ॥ आवती दीठी बेहु जणें, लाधी जाण्यूं लूस ॥ मो० ॥ १०॥ मंजूष मुद्रा खोलतां, निसरया तस्कर जेह ॥ पूछ्युं दिन केता थया, त्रीजो दिन कहे तेह ॥ मो० ॥ ११ ॥ तेणें त्रीजो दिन किम जाणीयो, सामिनी कहे सुविचार ॥ भेंषनुं दही जिम्यो घणुं, आवे ऊंघ अपार ॥ मो० ॥ ॥ १२ ॥ तेणे त्रीजे दिन वारो दीयो, नृप थयो सुणवा टांप ॥ सुण सखि भेद एहनो, तरियो आवतो ताप ॥ मो० ॥ १३ ॥ वली मदनिका

पूछा कथा, नववधू कहे अधिकार ॥ किण राय घाट घडाववा, तेडाव्या बहु सोनार ॥ मो० ॥ ॥ १४ ॥ भोयरा मांहि ते घडी, दीपनी ज्योत संघात ॥ मांहो मांहे पूछयां थकां, एक कहे अब रात ॥ मो० ॥ १५ ॥ तिहां नही सूरज चंद्रमा,केम रात जाणी एण ॥ टींमोरां भोजन भरूयां, निद्रा आवे तेण ॥ मो० ॥ १६ ॥ तेणें चोथे दिन वारो दीयो, कुण हेतु एहनो होय ॥ चितारी कहे सुण सखी, रातंधो हतो सोय ॥ मो० ॥ १७ ॥ सुणिवात एक सोहामणी. गुरु लह्या लाडु चार ॥ एक प्रथम चेलाने दीयो, बीजो बीजाने सार ॥ मो० ॥ १८ ॥ तिसरो चोथानें दीयो, एक आपें कियो भक्ष ॥ कहे तुरत जो चतुर छे, तेहना केता शिष्य॥मो० ॥ १९ ॥ कर जोमी स्वामीनी विनवुं, ए भेद मुऊ समऊाय ॥ खाधी खटाइ अति घणी, नयणे निंद भराय॥मो० ॥ २० ॥ पांचमे दिने वारो दीयो, राणी भणे अभिराम ॥ तेहने चेला त्रण हता, चोथुं त्रीजानुं नाम ॥ मो० ॥ २१ ॥ कहे राणी सुणरे सखी, उत्तंग मंरूप एक ॥ तस ऊ

पर नीचें रहे, उत्तम पंखी अनेक ॥ मो० ॥
॥ २२ ॥ एक ऊपरलुं नीचे मिले, तो ते बेउ स
रिखां होय ॥ नीचलुं एक उपर मिले, तो ते बि
मणां जोय ॥ मो० ॥ २३ ॥ कहे सखी ते केतां
हतां, पंखीयां तेणें प्रासाद ॥ हूं मूढमति जाणुं
नही, कहे मुज करीय प्रसाद ॥ मो० ॥ २४ ॥
मुज उंघ आवे अति घणी, दिन रमी पासा
सार ॥ जो चतुर छे तो आवजे, काले कहिशुं
विचार ॥ मो० ॥ २५ ॥ वली छठे दिन वारो
दीयो, राय चित्त लागी चूंप ॥ अब कहे वात
ज ताहरी, शीश नराउं खूप ॥ मो० ॥ २६ ॥
ते सातने पांच हुता, पंखीया उपर नीच ॥ नि
जकंत सूतो सांभले, आंख बेय निज मीच ॥
मो० ॥ २७ ॥ वली चतुर चितारी कहे. त्रण
चोरें चोरी कीध ॥ भंडार फोड्यो केहनो, सोन
इया बहु लीध ॥ मो० ॥ २८ ॥ ते सोनैया सं
ताडी करी. तस्कर गया सवि भाग ॥ एक चो
र आव्यो एकदा, लेइ गयो त्रीजो भाग ॥ मो०
॥ २९ ॥ बीजो पिण त्रीजो वंटो, एक अधिक
लेई जाय ॥ त्रीजो शेष रह्यो जीके, त्रिहुनें स

रिखा थाय ॥ मो० ॥३०॥ कहे सोनईया केटला, धुरथकी हुंता तेह ॥ काले आव कहेशुं वली, आज मुज दुःखे छे देह ॥ मो० ॥ ३१ ॥ सात मे दिन वारो दीयो, नृपवधू भेद कहेय ॥ सोनै या ते षट हुता, हिवे तुं लेखुं लेय ॥ मो० ॥ ॥ ३२ ॥ सुण ऊंट वनें चरवा गयो, एक वृक्ष मोटो दीठ ॥ लांबी गाबडी खप रह्यो, आवी न शके नीठ ॥ मो० ॥ ३३ ॥ कोपियो ऊंट ते ऊपरें, करी गयो मल मूत्र ॥ ऊंचा तरु उपर हुसी, वात पडे केम सूत्र ॥ मो० ॥ ३४ ॥ कहे सखी मुज कौतुक घणुं, नही कहुं आजनी रा त ॥ प्रीतमसेंती प्रेमनी, करवी छे बहु वात ॥ ॥ मो० ॥ ३५ ॥ आठमे दिन वारो दीयो, प्री छ्यो भेद सुरीत ॥ वृक्ष हुतो तेमां हती, जीर ण कूपनी भीत ॥ मो० ॥ ३६ ॥ बार वरसें प्रीतम मिल्यो, पद्मिनी पसली मांहे ॥ मोहोटां मुक्ताफल दीयां, करवा नारिनो उत्साहे ॥ मो० ॥ ३७ ॥ तिणें नारी ते नाखी दीयां, केम कियो पियुशुं रोष ॥ आज अमल पियु खवरावीयो, कही न शकुं पडे शोष ॥ मो० ॥ ३८ ॥ नवमे

दिन वारो दीयो, भेद कह्यो राणी ताम ॥ कर कांते ते रातां थयां, कीकी छबी मुख श्याम ॥मो०॥ ॥ ३९ ॥ मानिनी मन मां हे चिंतवे, मुज हती मोहोटी आश ॥ मुज गुंजाफल पियु दीयां, त्रं बकमूल न तास ॥ मो० ॥ ४० ॥ सुण नृप पंडित पूछिया, गया वार मां हे दोय ॥ पूंठे कहो केता र ह्या, चोज अछे इहां कोय ॥ मो० ॥ ४१ ॥ ए क कहे पंडित दश रह्या, बीजो कहे रह्यो ए क ॥ त्रीजो कहे सघला गया, कहे स्वामिनी सु विवेक ॥ मो० ॥ ४२ ॥ आज आंख फरके दा हिणी, कहेतां न आवे धात ॥ चिंता जणावी शोकनी, मत कांई घाले घात ॥ मो० ॥ ४३ ॥ दशमे दिन वारो दियो, राणी कहे सुण दास ॥ एक श्रावण ने भाद्रवो, बेहु गया बारे मास॥मो०॥४४॥ वली सुण सखि एक कामिनी, कार्य विचारी की ध ॥ परदेशें पियुनें चालतां, शेलडी हाथे दीध ॥ मो० ॥ ४५ ॥ चालतो हुतो लाभने, ते पिण नचाल्यो गाम ॥ नही कहुं अब निश्चे तणो, ज पवुं भगवंत नाम ॥ मो० ॥ ४६ ॥ इग्यारमे दिन वारो दियो, राणी कहे ते आम ॥ शेलडी

नें जेम फल नहीं, तेम तस निःफल काम ॥ मो० ॥ ४७ ॥ सुण नारी एक चतुर हती, निशि चमी ग्रह उत्तंग ॥ सिंहनुं रूप लिख्युं तिहां, कहे कारण कुण चंग ॥ मो० ॥ ४८ ॥ ए मर्म कहे मुज स्वामिनी, मुज न उपजे छ मास॥ आजजीव भूख्यो कलमले, व्रत कीधो उपवास ॥ मो० ॥ ४९ ॥ बारमे दिन राणी कहे, विरहिणी ए अभिप्राय ॥ सिंह देखि मृगवाहन त्रसे, तो वेगें राती जाय ॥ मो० ॥ ५० ॥ सुण नारी एक उंची चडी, वीण वजाडे केम ॥ पिण आजे हुं कहिशुं नहीं, पिउशुं खेलण प्रेम ॥मो० ॥ ५१ ॥ तेरमे दिन वारो दियो, अति रसिक ते राजान ॥ ते भेद पटराणी कहे, मदनिका सुण सावधान ॥ मो० ॥ ५२ ॥ चंद्रमा वाहन मिरगलो, नारीने पियुशुं नेह ॥ जो नाद वेध्यो नवि चले, तो वाधे निशि एह ॥ मो० ॥ ५३ ॥ इम नव नवी अचरिज कथा, निशि कहे नित्य छ मास ॥ चीतारीयें चित्त रंजीयो, प्रीतम पाड्यो पास ॥ मो० ॥ ५४ ॥ परहरी बीजी पद्मिनी, वश करयो नवली नार ॥ ते चतुरनारी कला खरी,जे

वश करे भरतार ॥ मो० ॥ ५५ ॥ अति चतुर चीतारी रमे, आपणा पियुने संग ॥ ए ढाल सुणंतां तीसरी, समयसुंदर मनरंग ॥ मो०॥५६॥

दुहा ॥ शोक्य मिली हिवे तेहनी, बोले भावे तेम ॥ अणख अदेखाई करे, वली मन चिंते एम ॥ १ ॥ इणे चीतारी वश कियो, अहो अम्हारो नाह ॥ अम्ह साहमुं देखे नहीं, कहो अब कीजें काह ॥ २ ॥ राजकाज छेडी करी, छेडी नारी कुलिन ॥ चीतारानी पुत्रिका, तिण शुं राजा लीन ॥ ३ ॥ देखी छल छिद्र तेहनुं, जो कोइ घाले घात ॥ कंत तणुं चित्त फेरवी, तो बंध बेसे वात ॥ ४ ॥

ढाल ४ थी ॥ पूरोने सोहागण रूडो साथीयो जी ॥ ए देशी ॥ हिवे ते चीतारी नारी दिन प्रतें जी, आवी मध्यान्ह आवास ॥ उरडा मांहे बेसी करी जी, एकली को नहीं पास ॥ १ ॥ करे रे चीतारी निंदा आपणीजी, जीवने दे उपदेश ॥ पुण्य पसायें पामी संपदा जी, मत अभिमान करेश ॥ करे० ॥ २ ॥ रायनां वस्त्र आभरण तज्यां जी, वली तज्यां शोल शिणगार ॥

बाप तणो वेश मूलगो जी, पेहेरी बेठी तिण वार ॥ क० ॥ ३ ॥ शीशें तरूया तिण राखडी जी, काचनी धडकली कान ॥ उगनीयां पीतल तणां जी, दिसतां सोवन वान ॥ क० ॥ ४ ॥ नकवेसर मोती ठीपनुं जी, तिलक टीला तणुं त्यांह ॥ काच अकीकनी मुद्रडी जी, काचनी कंचली बांह ॥ करे० ॥ ५ ॥ चउसरो बांध्यो गले चीडीयो जी, केसुडी बिंदली गाल ॥ हार पहेरयो हिये शंखनो जी, विचमां गुंजा फल लाल ॥ करे० ॥ ६ ॥ जांझर बेउ कांसातणां जी, पीतल वींछिया पाय ॥ पहेरण ठींटनो चरणीयो जी, उढण लोबडी काय ॥ करे० ॥ ७ ॥ एहवो वेश पेहेरी करीजी, जीवने दिये प्रतिबोध ॥ तुं मत कर जीव गारवो जी, तुं मत कर वली क्रोध ॥ करे० ॥ ८ ॥ ए सघली ऋद्धि रायनी जी, ए तुझ मूलगो वेश ॥ पुण्य प्रमाणें सुख पामीयो जी, मत कर वर्ग तुं लेश ॥ क० ॥ ९ ॥ गर्व थोडो पिण जो कियो जी, तो तुझने नृप एह ॥ कंठे झाली परी काढशे जी, तुरत देशे तुझ छेह ॥ करे० ॥ १० ॥ इण परें आत्मा निं

दती जी, नेदती कर्मनी कोड ॥ आपणां पाप आलोवती जी, नगवंत नवथी गेड ॥ क० ॥ ॥ ११ ॥ शोक्य शूली सरखी कही जी, पगने धाखे हीये पेसी ॥ निश दिन ग्रिद्र जोती रहे जी, मारे सूइ गले बेसी ॥ क० ॥ १२ ॥ रात दिन ग्रिद्र जोती थकी जी, देखीयो ए प्रस्ताव ॥ नूपनें तेमी संनारीयो जी, शोक्यनो दुष्ट स्व नाव ॥ क० ॥ १३ ॥ सुण पियु तें अह्मनें त जी जी, विण अपराध विशेष ॥ तेहनुं दुःख अ म को नहीं जी, पिण कुलक्षय हुंतो देख ॥ क० ॥ १४ ॥ जेणे तुऊनें आप वश कीयो जी, तेह चितारी धूतार ॥ तुऊ नणी ते कामण करेजी, मानजे सही निरधार ॥ क० ॥ १५ ॥ नृप क हे बात केम मानीयें जी, कामण केम करे कोय ॥ जीवथी अधिक मुऊने गणेजी, दूधमें पूरा मत जोय ॥ क० ॥ १६ ॥ कामणनुं एह पारखुंजी, अवगुण गुण करी दीठ ॥ जो अमें नयणें दे खाडशुं जी, तो पिण मानीश नीठ ॥ करे० ॥ ॥ १७ ॥ बेसे मध्यान्ह आवासमें जी, मंत्र सा धन करे नित्य ॥ निरति करवा नर मूकीयो जी,

ते कहे वात ए सत्य ॥ क० ॥ १८ ॥ ता पिण राय माने नहीं जी, आप रह्यो प्रछन्न ॥ नजरें दीठी आप निंदतीजी, वचन सुण्यां निज कन्न ॥ क० ॥ १९ ॥ ए वृत्तांत जाणी करीजी, चिंतवे नृप ए धन्य ॥ एहवी ऋद्धि पामी करीजी, गर्व करे नहीं मन्न ॥ क० ॥ २० ॥ अधम अंतेउर महारीजी, एहनें दूषण देइ ॥ शोक्यनें दुर्जन सारिखा जी, गुण तजी अवगुण लेई ॥ ॥ क० ॥ २१ ॥ अहो अहो एहनी चातुरीजी, अहो अहो धर्म्म यतन ॥ उत्तम एह अंतेउरी जी, राणी मांहे रतन ॥ क० ॥ २२ ॥ रायनुं मन्न प्रसन्न थयुंजी, चीतारी करी पटराणी ॥ अवर अंतेउरी अवगुणीजी, पुण्य तणां फल जाणी ॥ क० ॥ २३ ॥ चोथी ढाल पूरी थईजी, चतुर चीतारी चरित्र ॥ समयसुंदर कहे हिवे सुणोजी, धर्मनी वात विचित्र ॥ क० ॥ २४ ॥

दुहा ॥ विमलचंद्र इणे अवसरें, आचारज पदधार ॥ अनुक्रमें आव्या विहरता, साधु तणे परिवार ॥ १ ॥ जितशत्रु राजा आवीयो, साथें लेइ पटराणी ॥ पदपंकज प्रणमी करी, सु

णी साधुनी वाणी॥ २ ॥राजानें राणी बेहु, ली
धो श्रावक धर्म ॥ दान शियल तप नावना, स
दा करे शुनकर्म ॥ ३ ॥ अंतकालें ते एकदा,
अणसण करी अपार ॥ पटराणी राजा तणी,
पोहोती स्वर्ग मझार ॥ ४ ॥ तिहांथी चवी वै
ताढ्य गिरि, तोरणपुर अनिधान ॥ विद्याधर द
ढशक्तिनी, पुत्री थई परधान ॥ ५ ॥ नामें कन
कमाला निपुण, रूपवंती रति जेम ॥ नर यौव
न आवी नली, पेखत वाधे प्रेम ॥ ६ ॥ वास
व खेचर अपहरी, इहां मूकी करी गेह ॥ पाणी
ग्रहण करण नणी, सजी सामग्री एह ॥ ७॥

ढाल ५ मी ॥ मेघमुनि कांइ डमझोले रे ॥
ए देशी ॥ इणें अवसर तसु बांधव आव्यो, क
नकतेजा इणें ठाम ॥ वासव विद्याधरशुं मांड्यो,
मांहो मांहे संग्राम ॥ वात सुण प्रीतम मोरा
हो, हुं कहुं सघलुं विरतंत ॥ तूं चतुर विचक्षण
कंत ॥ वात० ॥ ए आंकणी ॥ एक एकनें घाव
दीधा सबला, बेहु मूआ ततकाल ॥ कनकमा
ला बंधव दुःख करती, बेठी अबला बाल॥वा०
॥ २ ॥ तिहां व्यंतर वली आव्यो कोइ, कहेवा

लागो एम ॥ पूरव जनम पिता हुं ताहरो, तुझ उपरें मुजप्रेम ॥ वात० ॥ ३ ॥ तिणवेला दृढ शक्ति विद्याधर, पूंठें आव्यो सोय ॥ अन्य रूप ते कीधुं कन्या, तेणें सुर अवसर जोय ॥ वात० ॥ ४ ॥ कनकतेजा वासव ते कन्या, पुत्री एह मृतरूप ॥ देवमाया करी कीधी व्यंतर, दीठा खेचर नूप ॥ वात० ॥ ५ ॥ विद्याधरें एम जाएयुं वासव, मुझ सुत मारयो एह ॥ तेणे पिण मारयो ते विद्याधर, तेणे वली कन्या तेह ॥ वात० ॥ ६ ॥ धिक् धिक् काम नोग ए अनरथ, धिक् धिक् ए संसार ॥ वैराग्यें दृढशक्ति विद्याधर, लीधो संजम नार ॥ वात० ॥ ७ ॥ व्यंतर माया करी जीवाडी, ते कन्या तिण वार ॥ बाप आगलें बेटी कहे सघलो, बांधव मरण प्रकार ॥ वात० ॥ ८ ॥ साध कहे कन्या रूप फेरयुं, किणे कारणें कहो देव ॥ देव कहे सांनल तुं मुनिवर, नांजुं तुझ संदेह ॥ वात० ॥ ॥ ९ ॥ क्षितिप्रतिष्ठ नगरीनो स्वामी, जितशत्रु हुतो राय ॥ चित्रांगद पुत्री तेणें परणी, श्रावक शुद्ध कहेवाय ॥ वात० ॥ १० ॥ अंतकाल

जब हूउ चितारो, राय दीयो नवकार ॥ काल करी व्यंतर हुं हुउ, ए मोटो उपकार ॥ वा० ॥ ॥ ११ ॥ अन्यदिवसें आव्यो इणे ठामें, दीठी दुःखिणी बाल ॥ अधिक सनेह अवधि करी जाण्यो, पूरव नव ततकाल ॥ वा० ॥ १२ ॥ मुझ पुत्री मत मार विद्याधर, जनक संघातें जाय ॥ में वियोग अण सहतें कीधी, ए कन्या मृतप्राय ॥ वात० ॥ १३ ॥ में विप्रतारयो तुं हिवे खमजे, मुनिवर मुझ अपराध ॥ तुं मुझ व्रतनो हेतु थयो सुर, इम कही विचरयो साध ॥ वात० ॥ १४ ॥ व्यंतर देव बचन समरंती, कनकमाला शुन्न ध्यान ॥ ईहापोह करतां तिहां पाम्युं, जातिसमरण ज्ञान ॥ वात० ॥ १५ ॥ कनकमाला कहे कोण मुजहोशे, तात कहो न्नरतार ॥ देव कहे पूरव न्नव होशे, सिंहरथ राजा सार ॥ वात० ॥ १६ ॥ केम संबंध होशे मुज तिणशुं, सुण पुत्री ससनेह ॥ वक्रशिक्षित वाजी अपहरशे, राजा आवशे तेह ॥ वात० ॥ ॥ १७ ॥ चिंता आरत मत करे पुत्री, सुखें रहे इण ठाम ॥ हुं तुज पासें रहीश रखवालो. त्यां ल

गें जा तुज काम ॥ वा० ॥ १८ ॥ व्यंतरशुं क्रीडा सुख करती, कनकमाला हुं एह ॥ व्यंतर काले गयो मेरुपर्वत, चैत्यवंदन नणी तेह ॥ वा० ॥ १९ ॥ मुज पुण्यें प्रेरयो तुं आव्यो, किधो तुरत विवाह ॥ एह संबंध कहियो में सघलो, तें पूछ्यो निजनाह ॥ वा० ॥ २० ॥ ए संबंध सुणतां पाम्यो, जातिसमरण राय ॥ पूरव नव तेणें दीठा सघला, आणंद अंग न माय॥ वा० ॥ २१ ॥ तेणे अवसर व्यंतर ते आव्यो, कीधो नृप परणाम ॥ कनकमाला सुरने कह्युं, सघलुं इम थयो विवाह ॥ वात० ॥ २२ ॥ व्यंतरसुर सिंहरथ राजानें, संतोष्यो अत्यंत ॥ नव्यदिव्य आहार जिमाड्या, मास सीम एकंत ॥ वात० ॥ २३ ॥ हिवे राजा कहे सुण तुं सुंदरी, दे मुझने आदेश ॥ मुझ विण सघला वयरी राजा, मिली ऊजाडे देश ॥ वा० ॥ २४ ॥ कनकमाला कहे सुण प्रीतम तुं, तुझ नगरी छे दूर ॥ पालो जातां दुःख पामीश तुं, ले विद्या नरपूर ॥ वा० ॥ २५ प्रज्ञप्ति विद्या तिणे दीधी, नृपें लीधी तेणी वार ॥ सुखें समाधें सिं

हरथ राजा, पोहोतो नगरमझार ॥ वात० ॥ ॥ २६ ॥ नगरलोक थयां अति हर्षित, वर्त्यो ज यजयकार ॥ समयसुंदर कहे पूरव भवनी, पां चमी ढाल उदार ॥ वात० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ इम ते राजा सिंहरथ, दिवस पांच मे जाय ॥ दिन केता एक तिहां रहि, नवल व धू लपटाय ॥ १ ॥ नगर प्रतें जाय एह नृप, रमवा सिंहरथ राय ॥ तेणें कारण ते लोकमें, निग्गई नाम कहाय ॥ २ ॥ अन्य दिवसें ते नि ग्गई, तिहां पोहोतो परभात ॥ केहवा लागो दे वता, सुण राजन एक वात ॥ ३ ॥ सामि बोल वा आवीयो, हुं जाउं बुं तेथ ॥ काल विलंब हो शे घणो, ए दुःख करशे एथ ॥ ४ ॥ तेणे का रणे तूं तिम करे, जिम ए सुखिणी थाय ॥ इम कहीनें व्यंतर गयो, हिवे नृप करे उपाय ॥ ५ ॥ राजापुर बसावियु नवुं, अति ऊंचा आवास ॥ धनवंत लोक बसे सुखी, आणंद लीलविलास ॥ ॥ ६ ॥ उत्तंग तोरण देहरां, जिनवर बिंब अनेक ॥ स्नात्र महोत्सव नव नवा, वारू नगर विवेक ॥ ७ ॥

ढाल ६ ठी ॥ श्रीमिंधर सांभलो ॥ ए देशी ॥

अन्यदिवस राय नीसरयो, हय गय रथ परिवार ॥ मारग मांहि देखीयो, अतिसुंदर सहकार ॥ १ ॥ अथिर छे आ संपदा, अथिर कुटुंब परिवार ॥ निग्गई नृप इम चिंतवे, अथिर सयल संसार ॥ अथिरछे० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ लागी मांजर महकती, लागी आंबा लुंब ॥ कोयल करे टहुकडा, रह्या मधुकर रस चुंब ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ राजायें एक मांजर ग्रही, नीसरते निज हाथ ॥एक एक फल फूल मंजरी, तेम ग्रही सघले साथ ॥ अथिर० ॥ ४ काष्टभूत आंबो कीयो, फल फूल मांजर तोडि ॥ शोभा सघली कारिमी, एहज मोटी खोडि ॥ अ० ॥ ५ ॥ वलते राजा पूछीयुं, कहो ते किहां सहकार ॥ देखाडियुं अंग उलगुं, सूको काष्ट असार ॥ अ० ॥ ६ ॥ आंबो केम थयो एहवो, वली पूछयुं तिण नृप ॥ तें मांजर ग्रही तेहनी. सैन्य कीयो ए सरूप ॥ अथिर० ॥ ७ ॥ ए स्वरूप आंबा तणुं, देखी चिंते राय ॥ हा हा अथिर शोभा इसी, क्षण मां हे खेरु थाय ॥ अ० ॥ ८ ॥अथिर माणसनुं आउखुं, ज्ञान अणी जेम उस ॥ अ

थिर राज ऋद्धि संपदा, उत्तम न करे शोष॥ अ
थि० ॥ ९ ॥ अथिर जोबन नर नारीनुं. जाणे
नदीनो वेग॥ अथिर कुटुंब सहुको मिल्युं, पग
पग अधिक उद्वेग॥ अ० ॥ १० ॥ अथिर रूप
कायातणुं, इंद्र धनुष जेम रंग ॥ अथिर मान
राजा तणां, जाणे गंग तरंग॥ अ० ॥ ११॥अ
थिर अनित्य अशाश्वता, ए संसार असार ॥इ
म चिंतवतां पामियो, जातिसमरण सार॥अ०
॥ १२ ॥ राज ऋद्धि छोडी करी, लीधो संजम
भार॥ दीधो शासन देवता, साधु वेश सुविचा
र॥ अ० ॥ १३ ॥ बडो वयरागी निग्गई, चोथो
प्रत्येक बुद्ध॥ गाम नगर पुर विहरतो, संजम
पाले शुद्ध॥ अ० ॥ १४ ॥ छठी ढाल पूरी थई,
निग्गई नृपनी एह॥ हिवे चारे एकठा होशे, स
मयसुंदर कहे तेह॥ अथिर० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ क्षितिप्रतिष्ठ नामें नगर, चउमुख दे
वल शुद्ध॥ ते सम काल समोसरया, चारे प्र
त्येक बुद्ध ॥ १ ॥ दैव जोगें चारे चतुर, चारे
दिशि चिहूं बार॥ पेठा देवुलमांहे ते, बेठा आ
सन सार ॥ २ ॥ पूरवादिशि करकंडु मुनि, द

क्षिण दुमुह महंत ॥ पश्चिम दिशि नमि राजऋषि, उत्तर निग्गई संत ॥ ३ ॥ मुझ लागे आशातना, आवे पूंठ प्रत्यक्ष ॥ साधु भक्ति करवा भणी, थयो चतुर्मुख यक्ष ॥ ४ ॥

ढाल ७ मी ॥ मातजी धन्य ते नर नारी ॥ ए देशी ॥ करकंडुने बालपणाथी, खरज हती अति गाढ ॥ तिण कारणें खाजें खणवा, तेह शिलाका काढी रे ॥ १ ॥ चारे साध मिल्या चउमुखमें, चतुर करे धर्म चर्चा ॥ यक्ष करे करजोडी सेवा, साधनी पूजा अर्चा रे ॥ चा० ॥ २ ॥ खाज खणीने तेह शिलाका, वली रूडी परें राखी ॥ दुमुह साधु देखीने बोल्या, रहि न शक्यो सत्य भांखीरे ॥ चा० ॥ ३ ॥ राजऋद्धि सघली तें छोडी, छोडी सघली माया ॥ एक वात अयुक्ति कीधी, लोभ सलीशुं लायारे ॥ चा० ॥ ४ ॥ आंख मांहे रज केम समाये, अमृतमां विष केम ॥ तुझ उत्कृष्टा चारित्र मांहे, एह शिलाका तेम रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ दुमुह शीख सुणी नमि राजा, दुमुह प्रतें इम भांखे ॥ राज काज चिंता तुं करतो, पिण हमणां कां दाखेरे ॥ चा० ॥ ६ ॥ त

ब गंधारी मुनिसर बोल्या, सुण नमिराय मुणिंदा ॥ सर्वथोक छोड्या थें तो पिण, एक न छोडी निंदा रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ मोक्षनणी उठ्यो तुं मुनिवर, निंदा नही तुऊ जुगती ॥ आपणी करणी पार उतरणी, जे करता ते नुगतारे ॥ चा० ॥ ८ ॥ कहे करकंडु सुणज्यो मुनिवर, अहितथकी जे वारे ॥ हितनी वात कहे तिणने को, दोष कही निरधारो रे ॥ चा० ॥ ९ ॥ साची वात कही करकंडू, मुनिवर सघले मानी ॥ साधु नला चारे चारित्रिया, कोई नही अनिमानीरे ॥चा०॥१०॥प्रत्येक बुद्ध तणी धर्म चर्चा,सातमी ढाल रसाल ॥ समयसुंदर कहे साधुतणा गुण, हिवे हूं कहीश विशालरे ॥ चा० ॥ ११ ॥

ढाल ८ मी ॥ राग गोडी ॥ वाडी फूली अति नली ॥ मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥ चार छत्रपति राजवी ॥ गुणगिरुआरे ॥ चारे चतुर सुजाण ॥ साधु गुण गिरुआरे ॥ चारे सकल कला निला॥गुण गिरुआरे ॥ चारे अमृत वाणि ॥साधु० ॥ १ ॥ चारे सख्य सुलक्षणा ॥ गु० ॥ चारे नूप निधान ॥ सा० ॥ चारे लीला लाडला ॥ गु०

॥ चारे पुरुष प्रधान ॥ सा० ॥ २ ॥ चारे न्याय निपुण भला ॥ गु०॥ चारे मोटा भूप॥ सा०॥ चारे चिर पाली प्रजा ॥ गु०॥ चारे इंद्र सरूप ॥ सा० ॥३॥चारे चार कारणथकी ॥गु० ॥ चारे प्रत्येक बुद्ध ॥ सा० ॥ चारे घर रमणी तजी ॥ गु० ॥ चारे ले व्रत शुद्ध ॥ सा० ॥४॥ चारे जातिसमरणा ॥ गु० ॥ चारे साधुने वेश ॥ सा० ॥ चारे एकाकी रहे ॥ गु० ॥ विचरे देश परदेश ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ चारे पंच माहाव्रती ॥ गु० ॥ चारे परम दयाल ॥ सा० ॥ चारे सुमति गुप्ति धरा ॥ गु० ॥ ब्रह्मचर्य प्रतिपाल ॥ सा० ॥ ६ ॥ चारे शीलांग रथधरा ॥ गु० ॥ चारे निर्मल गात्र ॥ सा०॥ चारे उत्कृष्टी क्रिया॥गु०॥चारे चारित पात्र ॥सा० ॥ ७ ॥ चारे सर्व माया तजी ॥ गु० ॥ चारे हुआ निर्ग्रंथ ॥ सा० ॥ चारे मद मत्सर तज्या॥ गु० ॥ चारे साधुने पंथ ॥ सा० ॥ ८ ॥ चारे इंद्रिय वश कीया ॥ गु० ॥ चारे जीत्यो लोभ ॥सा० ॥ चारे चंचल मन दम्युं ॥गु०॥ चारे गंडी शोभ ॥ सा० ॥ ९ ॥ चारे गुरु करे गोचरी ॥ गु० ॥ सूझतो ले आहार ॥ सा० ॥ चारे रस

ना रस तज्या ॥ गु० ॥ देह दिये आधार ॥
सा० ॥ १० ॥ चारे करे आतापना ॥ गु० ॥ चा
रे करे काउस्सग्ग ॥ सा० ॥ चारे शीत तावड
सहे ॥ गु० ॥ चारे सहे उपसर्ग ॥ सा० ॥११॥
चारे चारित्र खप करे ॥ गु० ॥ चारे निर्मल ग्या
न ॥ सा० ॥ चारे तप जप आगला ॥ गु० ॥
चारे चित्त धरे ध्यान ॥ सा० ॥ १२ ॥ चारे सा
धु क्षमाधरा ॥ गु० ॥ चारे समुद्र गंभीर ॥ सा
धु० ॥ चारे गुण मणि रोहणा ॥ गु० ॥ चारे
सुरगिरि धीर ॥ सा० ॥ १३ ॥ चारे तेज सूर
ज समा ॥ गु० ॥ चारे शीतल चंद ॥ सा० ॥चा
रे वृषभ धुरंधरा ॥ गु० ॥ चारे मोटा मुणिंद ॥
सा० ॥ १४ ॥ चारे शंख निरंजणा ॥ गु० ॥
चारे गजशौंडीर ॥ सा० ॥ चारे गगन निराश्र
या ॥ गु० ॥ चारे चरम शरीर ॥ सा० ॥ १५ ॥
चारे वायु तणी परें ॥ गु० ॥ अप्रतिबद्ध विहा
र ॥ सा० ॥ चारे सायर जल जिस्या ॥ गु० ॥
शुद्ध हृदय सुविचार ॥ सा० ॥ १६ ॥ चारे पं
कज दल जिस्या ॥ गु० ॥ निरूपम लेप निःसने
ह ॥ सा० ॥ चारे कूर्म तणीपरें ॥ गु० ॥ गुप्तें

द्रिय गुण गेह ॥ सा० ॥ १७ ॥ चारे खंडविषा
ण ज्यूं ॥ गु० ॥ एक जाति सुविरत्त ॥ सा० ॥
चारे नारंड पंखी ज्युं ॥ गु० ॥ अप्रमत्त एक
चित्त ॥ सा० ॥ १८ ॥ चारे सिंह तणी परें ॥
गु० ॥ दीसंता दुर्धृष्य ॥ सा० ॥ चारे विहग त
णीपरें ॥ गु० ॥ विप्रमुक्त वरपक्ष ॥ सा० ॥१९॥
इम अनंतगुण साधना ॥ गु० ॥ में केता कहेवा
य ॥ सा० ॥ सहस्र जीभ सुरगुरु स्तवे ॥ गु०
॥ तो पिण पूर्ण न थाय ॥ सा० ॥ २० ॥ में
केताएक कह्या ॥ गु० ॥ साधु तणा गुण सार
॥ सा० ॥ वचन विलास सफलो कियो ॥ गु०॥
सफल कियो अवतार ॥ सा० ॥ २१ ॥ धन्य
माता जेणें जनमीया ॥ गु० ॥ धन्य पिता कुल
वंश ॥ सा० ॥ धन्य धन्य करणी साधुनी ॥
गु० ॥ इंद्र करे प्रशंस ॥ सा० ॥ २२ ॥ चारे
केवल पामीया ॥ गु० ॥ चारे पहुता सिद्ध ॥
सा० ॥ चारे अजरामर थया ॥ गु० ॥ लाधी अ
विचल ऋद्धि ॥ सा० ॥ २३ ॥ चारे एक समे
चव्या ॥ गु० ॥ जनम थयो तेम जाण ॥ सा० ॥
एक समे दीक्षा ग्रही ॥ गु० ॥ तेम केवल वर

नाण ॥ सा० ॥ २४ ॥ ढाल सुणंतां आठमी ॥ गु० ॥ त्रूटे कर्मनी कोडी ॥ सा० ॥ चरण न मे चिहुं साधना ॥ गुणगिरुआरे ॥ समयसुंदर कर जोडी ॥ साधु० ॥ २५ ॥

ढाल ९ मी ॥ ऋषभ प्रभु पूजीयें ॥ ए देशी ॥ करकंडु दुमुह नमी ए, निग्गई नामें प्रसिद्ध ॥ माहामुनि गाईयें ए ॥ चिहुं खंडे करी वर्णव्या ए, चारे प्रत्येक बुद्ध ॥ १ ॥ महामुनि गाइयें ए ॥ गातां परमानंद मुक्तिसुख पाइयें ए ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ चारे चउगति दुःख हरे ए, तारण तरण समरथ ॥ मा० ॥ नाम जपतां जेहनुं ए, जनम हुये सुकयत्थ ॥ मा० ॥२॥ सोलेशें बासठने समे ए, जेठ पूनम दिन सार ॥ मा० ॥ चोथो खंड पूरो थयो ए, श्री आगरा नगर मझार ॥ मा० ॥ ३ ॥ विमलनाथ सुपसाउले ए, सानिध्य कुशल सुरिंद ॥ मा० ॥ चारे खंड पूरा थया ए, पाम्यो परमाणंद॥ मा० ॥ ४ ॥ देश परदेशें दीपता ए, नागड गोत्र शृंगार ॥ मा० ॥ श्रीसंघभार धुरंधरा ए, उदयवंत परिवार ॥ मा० ॥ ५ ॥ सूरूशाह गुणें नला

ए, संघनायक सुविचार ॥ मा० ॥ तेह तणे आ
ग्रह करी ए, कीधो ग्रंथ अपार ॥ मा० ॥ ६ ॥
श्री खरतर गछ राजियो ए, युग प्रधान जिन
चंद ॥ मा० ॥ श्री जिनसंघ सूरीसरु ए, जणता
अधिक आनंद ॥ मा० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्री
पूज्यना ए, सकलचंद मुणिंद ॥ माहा० ॥ ता
स शिष्यवाचक जणे ए. समय सुंदर आणंद॥
माहा० ॥ ८ ॥ चारे प्रत्येक बुद्धना ए, ए चारे
ही खंम ॥ माहा० ॥ चारे खंमे विस्तरयो ए,
जिहां रवि तेज अखंड ॥ माहा० ॥ ९ ॥ सांभ
लतां सुख संपदा ए, जणतां अधिक उल्लास ॥
माहा० ॥ दिन दिन संघ उदय घणो ए, आ
णंद लील विलास ॥ माहा० ॥ १० ॥ इति श्री
निग्गई राजा सहित चार प्रत्येक बुद्धस्य रास
नामा चतुर्थ खंड संपूर्णः ॥

॥ इति ग्रंथ समाप्त ॥

जैन धर्म संबंधी छपेला पुस्तकोनुं सूचीपत्र

१ जैन धर्म ग्यान प्रदीपक पुस्तक किमत ५॥ रुपया.
२ श्री जैन धर्म सिद्धांत सार पुस्तक किमत १। रुपया.
३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किमत १२ आणे.
४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किमत १। रुपया.
५ चंदराजाको रास किमत १ रुपया
६ लक्ष्मण बोध नाटक किमत १२ आणें.
७ श्रीपाल राजाकोरास चार खंडको किमत १० आणें.
८ अंजनाको तथा राणी पदमावतीको रास किं०८६ आणें.
९ मानतुंग मानवतीकोरास किमत ८६ आणें.
१०हंसराज बछराजको रास किमत ५ आणें.
११सतधारी राजा हरीचंदकी चोपाई किमत ४ आणें.
१२धन्ना सालभद्र शेठकी चोपाई किमत ४ आणें.
१३मंगळ कळसकी चोपाई किमत ४ आणें.
१४देवकी राणीको रास (छ भाइनो रास) किं० ४आणें
१५लिलावती राणीकी चोपाई किमत ४ आणें.
१६अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किमत ४ आणें.
१७चंदन मलीयागीरीकी चोपाई किमत ४आणें.
१८परदेशी राजाको रास किमत ४ आणें.
१९कयवन्ना शाहको रास किमत ४ आणे.
२०महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किमत४आणें
२१कांनड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंधन रास किमत ८४आणें
२२स्नात्र पूजा तथा वीस स्थानकनी पूजा किमत४आणें
२३स्तवन सझाय संग्रह प्रत्येक भाग किमत ८४ आणें.
२४मेणरहयानी चोपाई किमत ३ आणें.
२५पांचपद्दारी मोठी वंदना किमत ३ आणें.
२६पंडित देवचंद्रजीमहाराजकृत चोवीसी किमत १॥ आणा
२७पंडित आनंदघनजी महाराजकृत चोवीसी किमत १॥ आणा.
२८श्री जैन धर्म काव्यमाला (आठ भाग) किमत १ रुपया.